

शकील आजमी



परों को खोल

संकलन एवं संपादन : सचिन चौधरी



परों को खोल

शकील आज़मी

संकलन एवं संपादन: सचिन चौधरी



मंजुल पब्लिशिंग हाउस



मंजुल पब्लिशिंग हाउस

कॉरपोरेट एवं संपादकीय कार्यालय

द्वितीय तल, उषा प्रीत कॉम्प्लेक्स, 42 मालवीय नगर, भोपाल-462003

विक्रय एवं विपणन कार्यालय

7/32, भू तल, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

वेबसाइट: www.manjulindia.com

वितरण केन्द्र

अहमदाबाद, बेंगलुरु, भोपाल, कोलकाता, चेन्नई, हैदराबाद, मुम्बई, नई दिल्ली, पुणे

कॉपीराइट © शकील आज़मी 2017

यह संस्करण 2017 में पहली बार प्रकाशित

संकलन एवं संपादन: सचिन चौधरी

ISBN 978-81-8322-795-7

शकील आज़मी इस पुस्तक के लेखक होने की नैतिक ज़िम्मेदारी वहन करते हैं

यह पुस्तक इस शर्त पर विक्रय की जा रही है कि प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना इसे या इसके किसी भी हिस्से को न तो पुनः प्रकाशित किया जा सकता है और न ही किसी भी अन्य तरीके से, किसी भी रूप में इसका व्यावसायिक उपयोग किया जा सकता है। यदि कोई व्यक्ति ऐसा करता है तो उसके विरुद्ध कानूनी कार्रवाई की जाएगी।



शकील आज़मी की पैदाइश 20 अप्रैल 1971 को सहरिया, आजमगढ़ (उत्तर प्रदेश) में हुई। उनकी माँ का नाम सितारुन्निसा खान और पिता का नाम वकील अहमद खान है।

शकील आजकल मुम्बई में रहते हैं। बचपन से ही शायरी ने शकील को अपना लिया था। उन्होंने अपनी पहली गज़ल 1984 में लिखी, तब उनकी उम्र मात्र 13 वर्ष थी। 1994 में सूरत में एक बड़ा मुशायरा हुआ जिसमें उन्हें पहली बार अपनी शायरी पढ़ने का मौका मिला। उस मुशायरे में बहुत से दिग्गज शायर थे, जैसे जावेद अख्तर, निदा फ़ाज़ली और बशीर बद्र। उस मुशायरे में शकील को बेहद पसंद किया गया।

फिर क्या था, शकील आज़मी की शायरी का सफ़र परवान चढ़ने लगा। उन्हें बड़े-बड़े मुशायरों में बुलाया जाने लगा। उनकी शायरी की खुशबू धीरे-धीरे पूरे हिन्दुस्तान से होती हुई सरहद के पार तक पहुँचने लगी। उन्हें विदेशों में भी बुलाया जाने लगा। अमेरिका, कैंनेडा, दुबई, बरहीन, आबूधाबी, क़तर, मसक़त और न जाने कितने मुल्कों के सुनने वाले उनकी शायरी के दीवाने होते गए।

उनकी पहली किताब धूप दरिया (1996) में आई जो उर्दू में थी। उसके बाद उर्दू में उनकी कई किताबें आई और परो को खोल हिन्दी में प्रकाशित उनकी पहली किताब है। उन्होंने कई फ़िल्मों में गीत भी लिखे हैं। उन्हें पहला मौका वो तेरा नाम था (2004) फ़िल्म में कुक्कू कोहली ने दिया। उसके बाद फ़िल्मों में लिखने का सिलसिला लगातार जारी है।

शकील आज़मी की शायरी में एक ताज़ाकारी है। उनके यहाँ दूसरों से हटकर बात करने का खास सलीका है जो उनको पढ़ने और सुनने वालों को अपना बना लेता है।

शकील आज़मी को मैंने सबसे पहले वाह-वाह क्या बात है टी.वी. सीरियल के स्टेज पर देखा और सुना। फिर मैंने उनसे बातचीत की और इस तरह दोस्ती का सिलसिला शुरू हुआ। मैं शकील आज़मी का एक बड़ा क़द्रदान हूँ और मुझे ख़ुशी है कि मुझे उनकी शायरी पर काम करने का मौका मिला।

सचिन चौधरी

संकलनकर्ता

मैं और मेरी शायरी

शायरी का जन्म भावनाओं से होता है और भावनाएँ पैदा होती हैं जीवन के आस-पास के उन तत्वों के स्वभाव और बरताव से जो शायर के जीवन में कभी जाने और कभी अनजाने में प्रवेश करते हैं। ये तत्व प्रेम बनकर व्यक्ति के मन में खिलते और शरीर में महकते हैं, खुशी बन कर चेहरे पर मुस्काते और खिलखिलाते हैं, पीड़ा बनकर आँखों से आँसू की तरह बहते हैं, क्रोध बनकर ज़बान पर गाली की तरह आते हैं और कभी-कभी अपनी सीमा लाँघकर हाथापाई, लाठी-डंडा, तलवार और बन्दूक तक पहुँच जाते हैं। भावनाएँ जब सीमा पार करती हैं तो व्यक्ति शायर नहीं होता, वो एक साधारण मनुष्य या आम आदमी होता है।

शायर की पीड़ा उसकी आँखों में आँसू बनकर नहीं आती बल्कि उसकी कलम में रौशनाई का काम करती है। शायर अपने क्रोध को जी कर शायरी बनाता है और उसे जज़्बात के गीले शब्दों में कागज़ पर लिखता और सावन की रिमझिम फुहारों की तरह मन के होंटों से गुनगुनाता है। यदि शायर और आम आदमी के बीच का ये फ़र्क मिट जाये और आम आदमी भी शायर के स्तर पर आ जाए तो संसार की सारी भाषाएँ खत्म हो जाएँगी, सिर्फ़ एक भाषा प्रचलित होगी जिसका नाम मुहब्बत है।

शायरी का जन्म उन तस्वीरों से भी होता है जो शायर की अपनी नहीं होतीं लेकिन इन तस्वीरों के रंग शायर की आँखों में जमकर क़तरा-क़तरा उसके हृदय सागर में टपकते हैं और जीवन के रंगों में मिलकर उसके अपने हो जाते हैं। ये रंग कभी राष्ट्रीय स्तर पर दंगों में जलते हुए शहर और राख होते हुए मासूम इन्सानों के होते हैं तो कभी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कुछ शक्तिशाली और ज़ालिम देशों के हाथों बनाए गए हिरोशिमा और नागासाकी, इराक़, अफ़ग़ानिस्तान और फ़िलिस्तीन के भी होते हैं। युद्ध देश में हो या देश के बाहर खून तो इन्सानों का ही बहता है और शायर हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई, यहूदी या पारसी के घर में पैदा होने के बावजूद अपनी ज़ात में एक ऐसे मज़हब का निर्माण करता है, जिसकी बुनियाद इन्सानियत की ज़मीन पर रखी जाती है। उसकी आत्मा ईश्वर की कुदरत और उसकी वहदानियत की तलाश में सफ़र

करती है, उसकी इस धार्मिकता का सफ़र न तो किसी के धर्म के दायरे को तोड़ने का लोभ रखता है और न ही किसी की आस्था को चोट पहुँचाने की साज़िश करता है। शायर की ये रूहानी यात्रा उस मुक़ाम से शुरू होती है जहाँ पहुँचकर तमाम रास्ते एक हो जाते हैं -

ख़ुदा का नाम लिखा है तमाम चेहरों पर
मिरे लिए तो हर इक आदमी मुहब्बत है

चाहे गीता में या कुरान में हो
गुफ़्तगू प्यार की ज़बान में हो

महेश भट्ट की बहुचर्चित फ़िल्म नज़र में संगीतकार रूपकुमार राठोड़ के साथ मैंने एक सूफ़ी गीत लिखा था जो फ़िल्म की हीरोइन मीरा और जोगन का किरदार अदा कर रही नीना गुप्ता पर फ़िल्माया गया था। फ़िल्म की शूटिंग के दौरान जब महेश भट्ट पाकिस्तान गए तो वहाँ उन्होंने मीडिया को मेरा गीत यह कहकर सुनाया था कि यह गीत कोई हिन्दुस्तानी गीतकार ही लिख सकता था। गीत की चंद पंक्तियाँ इस तरह हैं -

श्याम की बन्सी पर मैं झूमूँ
शंकर के डमरू पर नाचूँ
करूँ मैं अल्लाह-अल्लाह
बोलूँ मैं मौला अली-अली
मैं जोगन बन गई
मिरी भक्ति है सिंगार मिरा
यही यार मिरा यही प्यार मिरा
मिरे रोम-रोम में राम बसे
मन मीरा में घनश्याम बसे
मिरे लब पर हरदम हरी-हरी
मैं बोलूँ मौला अली-अली
मैं जोगन बन गई

मेरे अन्दर का शायर अपने अड़ोस-पड़ोस, घर, घर के बाहर, सरहद और सरहदों के पार जहाँ तक देखता है, जहाँ तक महसूस करता है, वहाँ तक अपनी शायरी में सफ़र करता है और इस सफ़र के दृश्य अपनी शायरी के माध्यम से आपको दर्शाता है -

तोड़ दो तो भी सच ही बोलेगा
आइना कब किसी से डरता है

मेरे अन्दर का शायर बाज़ार की तिजारत से लेकर देश की सियासत तक के हंगामों से प्रभावित होता है। मेरे अन्दर का शायर घरेलू रिश्तों की गंभीरता से लेकर दोस्तों की बैठकों में होने वाले हँसी मज़ाक़ तक, मशीनों, कारखानों, कारोबार और बाज़ार में जीवन को चलाने वाले साधनों तक रोज़मर्रा से जुड़ी हुई घटनाओं और छोटी-छोटी बातों से प्रेरणा लेता है और उनके ताने-बाने से अपनी शायरी के लिए लिबास बुनता है। मेरे अन्दर का शायर जब प्रेमभाव में होता है तो चाँद में उसे प्रेमिका का चेहरा दिखाई देता है -

चाँद को ऐसे तकता हूँ
जैसे तेरा चेहरा हो

और जब वो भूका होता है तो वही चाँद उसे आसमान पर थाली की तरह नज़र आता है -

भूक में इश्क़ की तहज़ीब भी मर जाती है
चाँद आकाश पे थाली की तरह लगता है

जिस तरह मौसम बदलते हैं, उसी तरह इन्सान की तबीअत भी बदलती है, मौसम और इन्सान के मिज़ाज के साथ दोस्ती-दुश्मनी भी बदलती है, रिश्तों के रंग हल्के और गहरे भी होते रहते हैं, घर तोड़कर नए बनाए जाते हैं, गाँव, कस्बों और शहरों के नाम, नक्शों, रास्तों और मन्ज़िलों की दिशाओं में परिवर्तन आता है। खुशी और ग़म, धूप और छाँव ज़िन्दगी का हिस्सा हैं। ज़िन्दगी और समाज के इस नित-नए बदलाव से मेरे अन्दर का शायर भी प्रभावित होता है और मेरी शायरी भी -

कोई भी ग़म हो बहुत देर तक नहीं रहता
मुहब्बतों में बिछड़ कर भी लोग जीते हैं

इस बदलती हुई दुनिया और आपके मिज़ाज से मैं और मेरी शायरी कितना मेल रखते हैं, मुझे आपसे ये जानने की लालसा रहेगी।

आपका, शकील आजमी

शकील आज़मी की पुस्तकें, सम्मान व फ़िल्मों के लिए लिखे गए गीत

उर्दू में पुस्तकें

धूप दरिया (1996)

एश-ट्रे (2000)

रास्ता बुलाता है (2005)

खिजाँ का मौसम रुका हुआ है (2010)

मिट्टी में आसमान (2012)

पोखर में सिंघाड़े (2014)

अवॉर्ड

गुजरात गौरव अवॉर्ड, गुजरात उर्दू साहित्य अकादमी (2012)

कैफ़ी आज़मी अवॉर्ड, कैफ़ी आज़मी अकादमी, लखनऊ (2007)

गुजरात उर्दू साहित्य अकादमी अवॉर्ड (1996-2000-2005-2010-2012)

उत्तर प्रदेश उर्दू साहित्य अकादमी अवॉर्ड (1996-2005-2014)

बिहार उर्दू साहित्य अकादमी अवॉर्ड (2005-2010-2012-2014)

महाराष्ट्र उर्दू साहित्य अकादमी अवॉर्ड (2010-2014)

फ़िल्में

मदहोशी, ज़िद, ज़हर, तुम बिन - 2, 1920 : ईविल रिटर्न्स, हॉन्टेड, ई एम आई, नज़र, वो लम्हे, धोखा, लाइफ एक्सप्रेस, तेज़ाब (द एसिड ऑफ़ लव), करले प्यार करले, इश्क़ के परिन्दे, शोबिज़, श्री, वो तेरा नाम था, धूम धड़ाका, यू आर माय जान, या रब, लखनवी इश्क़, पहली नज़र का प्यार, ट्रंप कार्ड, और अन्य फ़िल्मों के अलावा कई टी.वी. धारावाहिकों के साथ गीतों व ग़ज़लों के अनेक प्राइवेट एलबम।

गज़लें

नज़्में

चुनिंदा अशआर

फ़िल्मी नग़्मे

ग़ज़लें

ग़ज़ल नीमबेहोशी के मौसम में जन्म लेती है और इसी मौसम की फ़ज़ा में खिलती और महकती है, होश की दख़लअन्दाज़ी इस बहार में पतझड़ का काम करती है। उर्दू शायरी में ग़ज़ल सबसे नाज़ुक और मुश्किल विधा है, नाज़ुक इन मानों में कि अल्फ़ाज़ के चयन और उनके इस्तेमाल में ज़रा सी भी चूक ग़ज़ल के हुस्न को बिगाड़ देती है, मुश्किल इसलिए कि बरसों की रियाज़त और पूरे इन्वॉल्वमेंट के बग़ैर ये क़ाबू में नहीं आती। ग़ज़ल उस ख़ूबसूरत औरत की तरह है जो मर्द से भरपूर मुहब्बत चाहती है, अगर शायर ग़ज़ल का ध्यान न रखे, उसके नाज़ न उठाए तो ग़ज़ल शायर से ऐसे रूठती है कि महीनों बात नहीं करती। इस रूठी हुई महबूबा को मनाना आसान काम नहीं होता क्योंकि कई बार तो ये शायर को छोड़कर भी चली जाती है, और वो भी हमेशा के लिए।

—शकील आज़मी

1

कहीं कोई है जो नब्ज़े-दुनिया चला रहा है वही खुदा है
जो हो के ग़ायब कमाल अपने दिखा रहा है वही खुदा है

अंधेरी रातों के आँचलों में जो झिलमिलाता है नूर बनकर
जो चाँद तारों से आसमाँ को सजा रहा है वही खुदा है

सहर की महकी हुई फ़ज़ा में सुनहरे सूरज का ताज पहने
जो वादियों पे गुलों की चादर बिछा रहा है वही खुदा है

ये चहचहाते हुए परिन्दे इबादतों में हैं जिसकी शामिल
दरख्त सजदे में जिसके सर को झुका रहा है वही खुदा है

गिज़ाएँ ¹ पहुँचा रहा है गहरे समुन्दरों में जो मछलियों को
चमकते मोती जो सीपियों में बना रहा है वही खुदा है

जो बन के बादल ज़मीं पे बरसे, ज़मीं को सीचें, उगाए सब्ज़े ²
जो कच्ची फ़सलों को धूप बनकर पका रहा है वही खुदा है

कभी पहाड़ों की चोटियों से, कभी समुन्दर के साहिलों से
बगैर बोले जो अपनी जानिब बुला रहा है वही ख़ुदा है

-
1. ख़ुराक
 2. हरियाली

2

खुद को इतना भी मत बचाया कर
बारिशें हों तो भीग जाया कर

काम ले कुछ हसीन होंटों से
बातों-बातों में मुस्कुराया कर

दर्द हीरा है दर्द मोती है
दर्द आँखों से मत बहाया कर

चाँद लाकर कोई नहीं देगा
अपने चेहरे से जगमगाया कर

धूप मायूस लौट जाती है
छत पे कपड़े सुखाने आया कर

कोई तस्वीर कोई अफ़साना
कुछ न कुछ रोज़ ही बनाया कर

कौन कहता है दिल मिलाने को
कम से कम हाथ तो मिलाया कर

3

अपनी मन्ज़िल पे पहुँचना भी, खड़े रहना भी
कितना मुश्किल है बड़े होके बड़े रहना भी

मसलेहत [1](#) से भरी दुनिया में ये आसान नहीं
ज़िद भी कर लेना उसी ज़िद पे अड़े रहना भी

तेज़ आँधी में इसे मोज़ज़ा [2](#) समझा जाए
इन दरख्तों का ज़मीनों में गड़े रहना भी

दिल हो नाराज़ तो ख़ुशियों पे असर पड़ता है
हर घड़ी ठीक नहीं ख़ुद से लड़े रहना भी

फ़ास्ला करके कभी शहर के हँगामों से
अच्छा लगता है यूँ ही घर में पड़े रहना भी

काश मैं कोई नगीना नहीं पत्थर होता
क़ैद जैसा है अँगूठी में जड़े रहना भी

-
1. समझौता
 2. चमत्कार

4

परीं को खोल ज़माना उड़ान देखता है
ज़मीं पे बैठके क्या आसमान देखता है

जो चल रहा है निगाहों में मन्ज़िलें लेकर
वो धूप में भी कहाँ साएबान देखता है

खंडर में किसको महल की तलाश ले आई
ये कौन रुक के मिरी आन-बान देखता है

यही वो शहर जो मेरे लबों से बोलता था
यही वो शहर जो मेरी ज़बान देखता है

मिला है हुस्न तो इस हुस्न की हिफ़ाज़त कर
संभल के चल तुझे सारा जहान देखता है

कनीज़ हो कोई या कोई शाहज़ादी हो
जो इश्क़ करता है कब ख़ानदान देखता है

घटाएँ उठती हैं बरसात होने लगती है
जब आँख भरके फ़लक को किसान देखता है

मैं जब मकान के बाहर क़दम निकालता हूँ
अजब निगाह से मुझको मकान देखता है

5

मर के मिट्टी में मिलूँगा, खाद हो जाऊँगा मैं
फिर खिलूँगा शाख पर आबाद हो जाऊँगा मैं

तेरे सीने में उतर आऊँगा चुपके से कभी
फिर जुदा होकर तिरी फ़रियाद हो जाऊँगा मैं

बार-बार आऊँगा मैं तेरी नज़र के सामने
और फिर इक रोज़ तेरी याद हो जाऊँगा मैं

अपनी जुल्फ़ों को हवा के सामने मत खोलना
वरना खुशबू की तरह आज़ाद हो जाऊँगा मैं

तेरे जाने से खंडर हो जाएगा दिल का नगर
छोड़कर मत जा मुझे बरबाद हो जाऊँगा मैं

6

हर घड़ी चश्मे-खरीदार [1](#) में रहने के लिए
कुछ हुनर चाहिए बाज़ार में रहने के लिए

ऐसी मजबूरी नहीं है कि चलूँ पैदल मैं
खुद को गरमाता हूँ रफ़्तार में रहने के लिए

मैंने देखा है जो मर्दों की तरह रहते थे
मस्खरे बन गए दरबार में रहने के लिए

अब तो बदनामी से शोहरत का वो रिश्ता है, कि लोग
नंगे हो जाते हैं अखबार में रहने के लिए

जीतना सिर्फ़ इलेक्शन ही नहीं काफ़ी है
जंग इक और है सरकार में रहने के लिए

शाखे-गुल छोड़ के क्या जाने हमें क्या सूझी
आ गये साय-ए-तलवार में रहने के लिए

थक गया मैं तो मिरे साथ सितारे लेकर
रात आई दरो-दीवार में रहने के लिए

[1](#) . ग्राहक की नज़र में

7

सवेरे निकलूँ मैं शाम आऊँ तो घर चलाऊँ
पसीना जाकर कहीं बहाऊँ तो घर चलाऊँ

ज़रूरतों की तमाम चीज़ें हैं उस किनारे
मैं बहते दरिया के पार जाऊँ तो घर चलाऊँ

जहाँ पे मरता हूँ रोज़ जीने के वास्ते मैं
वहीं से ख़ुद को बचा के लाऊँ तो घर चलाऊँ

ये दाएरा है जो रोज़ो-शब [1](#) का, इसी में रहकर
यहाँ-वहाँ से मैं कुछ बचाऊँ तो घर चलाऊँ

सभी सवालों की ग़्ठरियों में पड़ी हैं गाँठें
मैं अपने नाख़ुन ज़रा बढ़ाऊँ तो घर चलाऊँ

बहुत है मुश्किल सुनहरे गेहूँ को रोटी करना
कहीं ख़रीदूँ कहीं पिसाऊँ तो घर चलाऊँ

किचन से स्कूल तक का चक्कर है भारी पत्थर
ये भारी पत्थर अगर उठाऊँ तो घर चलाऊँ

ये मेरी बीवी ये मेरे बच्चे जो मेरे दुख हैं
इन्हीं दुखों को मैं सुख बनाऊँ तो घर चलाऊँ

उठाके काँधे पे माल अपना फिरुँ नगर भर
मैं बस्तियों में सदा लगाऊँ तो घर चलाऊँ

हज़ार शहरों की खाक छानी मिला न कुछ भी
अब अपने खेतों में हल चलाऊँ तो घर चलाऊँ

8

कहीं खोया खुदा हमने कहीं दुनिया गंवाई है
बड़े शहरों में रहने की बड़ी कीमत चुकाई है

वो दोनों साथ चलना चाहते थे दूर तक लेकिन
मुहब्बत करने वालों के मुक़द्दर में जुदाई है

हमें देखो कि मर कर किस तरह ज़िन्दा बचे हैं हम
जहाँ तन्हा हुए थे हम वहीं महफिल सजाई है

न लफ़्ज़ों में न तस्वीरों में देखी थी कभी हमने
गली-कूचों में चलते-फिरते जो सूरत दिखाई है

कभी तो नूर फैलेगा तिरे काग़ज़ से दुनिया में
लिखे जा जब तलक तेरे क़लम में रोशनाई है

9

तन-मन डोले, बर्तन बोले, छन-छन करता तेल है पैसा
घर से बाहर तक की दुनिया जो भी है सब खेल है पैसा

हर महफ़िल में हाथ मिलाए, चेहरे पर मुस्कान सजाए
सबकी यारी कारोबारी सब का सबसे मेल है पैसा

असली को नकली करता है, नकली को असली करता है
ऊँची कुर्सी पर बैठा है लेकिन बारह फ़ेल है पैसा

जेब में आकर आँख दिखाए, मूँछ बढ़ाए, ताव धराए
लाठी खड़के, गोली तड़के, थाना-चौकी-जेल है पैसा

छोटे धन्दे भी शहरों में बड़ी कमाई कर लेते हैं
दही-कचौरी, वड़ा, समोसा, पानीपूरी, भेल है पैसा

लाख छुपाओ छुप न पाए, राज़ ये आखिर खुल ही जाए
दीवारों से खुशबू आए, घर पर चढ़ती बेल है पैसा

तेरा है न मेरा है ये सदियों से इक फेरा है ये
इस स्टेशन उस स्टेशन आती जाती रेल है पैसा

10

तुझसे बिछड़ के तेरी वफ़ा के बग़ैर भी
मैं साँस ले रहा हूँ हवा के बग़ैर भी

मैं जी गया जो तेरे बिना तो अजब है क्या
ज़िन्दा हैं कितने लोग ख़ुदा के बग़ैर भी

दस्ते-तलब [1](#) उठाया मगर कुछ नहीं कहा
माँगा है मैंने तुझको दुआ के बग़ैर भी

ऐसा भी कितनी बार हुआ इन्तेज़ार में
दरवाज़ा खुल गया है सदा [2](#) के बग़ैर भी

मैं रो रहा था और कोई रन्ज भी न था
बरसात हो रही थी घटा के बग़ैर भी

कुछ लोग जुर्म करके भी आज़ाद हैं 'शकील'
हमको सज़ा मिली है ख़ता के बग़ैर भी

-
1. माँगने वाला हाथ
 2. आवाज़

11

प्यार मिल जाता है, चाहत नहीं मिलती सबको
दोस्ती में भी मुहब्बत नहीं मिलती सबको

सैकड़ों जाते हैं दरवाज़े पे दस्तक देकर
दिल में आने की इजाज़त नहीं मिलती सबको

सिर्फ़ मरने से अदा होती नहीं रस्मे-वफ़ा
मौत के बाद भी जन्नत नहीं मिलती सबको

चन्द हीरों को ही मिलता है चमकने का नसीब
काम सब करते हैं शोहरत नहीं मिलती सबको

आइने सबने दुकानों में सजा रखे हैं
आइनों के लिए सूरत नहीं मिलती सबको

देखने वाले बहुत कम हैं पसे-मन्ज़र [1](#) तक
आँख मिल जाती है हैरत नहीं मिलती सबको

कोशिशें करके भी नाकाम कई होते हैं
एक जैसी यहाँ किस्मत नहीं मिलती सबको

दिल को दिल्ली की तरह जीतना पड़ता है 'शकील'
ये हुकूमत है हुकूमत नहीं मिलती सबको

[1](#). दृश्य के पीछे

12

खुद को दुख देना, उजड़ना मिरी मजबूरी है
ज़िन्दगी तुझसे बिछड़ना मिरी मजबूरी है

टूटते रिश्ते की पोशाक का धागा हूँ मैं
अब बुनाई से उधड़ना मिरी मजबूरी है

मैं अकेला कई लोगों से नहीं लड़ सकता
इसलिए खुद से झगड़ना मिरी मजबूरी है

वरना मर जाएगा बच्चा ही मिरे अन्दर का
तितलियाँ रोज़ पकड़ना मिरी मजबूरी है

कहाँ मिट्टी का दिया और कहाँ तेज़ हवा
जलते रहना है तो लड़ना मिरी मजबूरी है

रास्तों से भी तअल्लुक है मिरा घर जैसा
साथ वालों से पिछड़ना मिरी मजबूरी है

मेरा साया ही मिरे पौधों का दुश्मन ठहरा
अपनी मिट्टी से उखड़ना मिरी मजबूरी है

मैं बना ही था किसी रोज़ बिगड़ने के लिए
सो किसी रोज़ बिगड़ना मिरी मजबूरी है

13

छत दुआ देगी किसी के लिए ज़ीना बन जा
डूबता देख किसी को तो सफ़ीना बन जा

रूह तो पहले से ही पाक मिली है तुझको
दिल भी कर साफ़ ज़रा और मदीना बन जा

ज़िन्दगी देती नहीं सबको सुनहरे मौक़े
तुझको अँगूठी मिली है तो नगीना बन जा

शौक़ खुशबू में नहाने का बहुत है जो तुझे
आ मिरे जिस्म से मिल मेरा पसीना बन जा

आ किसी रोज़ मिरे दर्द को बादल करने
और मिरी आँखों में बारिश का महीना बन जा

14

हर भीड़ का मैं हिस्सा, मैं आम आदमी हूँ
रहता हूँ फिर भी तन्हा मैं आम आदमी हूँ

मुझपर ही पाँव रखकर जाते हैं सब गुज़रकर
मन्ज़िल का हूँ मैं रस्ता मैं आम आदमी हूँ

रहता हूँ थोड़ा-थोड़ा सबकी कहानियों में
मेरा न कोई क्रिस्सा मैं आम आदमी हूँ

सबका हूँ आइना मैं फिर भी हूँ बेनिशाँ मैं
मेरा न कोई चेहरा मैं आम आदमी हूँ

लेकर मिरी किताबें, देदी गईं शराबें
खाली है मेरा बस्ता मैं आम आदमी हूँ

सबकी है अपनी मस्जिद, मस्जिद के सब खुदा हैं
करना है मुझको सजदा मैं आम आदमी हूँ

फुटपाथ से महल तक, हर खुर्दुरी गज़ल तक
बनता हूँ मैं तमाशा मैं आम आदमी हूँ

15

दिल भी इक गहरा कुआँ है झाँक कर सीने में देखो
खुद को पहले कुछ समझ लो फिर मज़ा जीने में देखो

मन्ज़रों को ज़िन्दा रखना चाहतों पर मुन्हसिर [1](#) है
क़ैद कर लो आँखों में फिर मुझको आईने में देखो

मैं तुम्हारा लगता क्या हूँ मत करो अन्दाज़ा इसका
मैं तुम्हारा कितना हूँ ये अपने तख्मीने [2](#) में देखो

हौसले से होती है तय हर बड़ी-छोटी बुलन्दी
तुममें कितना हौसला है पहले ही ज़िने [3](#) में देखो

ऐसे-वैसे लोगों में क्या गुफ़्तगू और क्या शराबें
हममिज़ाजों की हो महफ़िल तो मज़ा पीने में देखों

खुर्दुरी ग़ज़लों को कैसे रेशमी कर देता हूँ मैं
ये हुनरमन्दी मिरे लहज़े [4](#) के पश्मीने [5](#) में देखो

-
1. निर्भर
 2. अनुमान
 3. सीढ़ी
 4. स्वर
 5. रेशमी ऊनी कपड़ा

16

बहुत फैला हूँ घटना चाहता हूँ
मैं बिखरा हूँ सिमटना चाहता हूँ

हज़ारों साल से खामोश हूँ मैं
मुझे छोड़ो मैं फटना चाहता हूँ

खड़ा हूँ पेड़ बनकर रास्ते में
मुझे काटो मैं कटना चाहता हूँ

मुझे ऐ ज़िन्दगी बाँहों में ले ले
मैं तुझसे फिर लिपटना चाहता हूँ

जहाँ पहुँचा हूँ काफ़ी मुश्किलों से
उसी मन्ज़र से हटना चाहता हूँ

कहाँ से आ गया हूँ मैं कहाँ तक
यहाँ से अब पलटना चाहता हूँ

17

पलट के देखा तो वो था न उसका साया था
किसी ने मुझको बहुत दूर से बुलाया था

यही फ़लक है कि जिस पर कभी हमारे लिये
तमाम रात कोई चाँद जगमगाया था

फिर उसके बाद मैं तनहा रहा, उदास रहा
ज़रा सा मुझको किसी का खयाल आया था

उसी को सोच के रोई हैं बारहा आँखें
उसी को देख के इक बार मुस्कुराया था

ये ग़म निकलता नहीं मेरे जानो-दिल से कभी
जिसे मैं अपना समझता था वो पराया था

भरम भी रख न सका मेरी सादगी का वो
मैं जान-बूझ के जिससे फ़रेब खाया था

मिले थे घर के दरीचे भी साज़िशों में 'शकील'
हवा ने मेरे चरागों को जब बुझाया था

18

मेरी बुनियाद 1 को तामीर 2 से पहचाना जाय
मुझको उजलत 3 नहीं ताखीर 4 से पहचाना जाय

मैं कई शक्ल में रहता हूँ बदन पर अपने
मेरा चेहरा मिरी तहरीर 5 से पहचाना जाय

कोई समझे मिरी खामोश निगाहों की सदा
दर्द मेरा मिरी तस्वीर से पहचाना जाय

आँख का देखा हुआ झूट भी हो सकता है
ख्वाब को ख्वाब की ताबीर 6 से पहचाना जाय

मैंने पानी के लिए रेत उड़ाई है बहुत
मेरी तक्रदीर को तदबीर 7 से पहचाना जाय

मेरे काँधे से उतारे न कोई मेरी सलीब
जुर्म मेरा मिरी ताज़ीर 8 से पहचाना जाय

इस अँधेरे में ये झनकार है शम्ओं की तरह
यानी मुझको मिरी ज़नजीर से पहचाना जाय

मेरा सब कुछ मिरे माज़ी [9](#) के हवाले से है
मेरे मंगल को मिरे पीर [10](#) से पहचाना जाय

-
- [1](#) . नींव
 - [2](#) . निर्माण
 - [3](#) . शीघ्रता
 - [4](#) . विलम्ब
 - [5](#) . लेख
 - [6](#) . परिणाम
 - [7](#) . प्रयास
 - [8](#) . दंड
 - [9](#) . अतीत
 - [10](#) . सोमवार

19

कभी-कभी तिरी आवाज़ पर रुकूँ भी नहीं
कि तू बुलाए मुझे और मैं सुनूँ भी नहीं

इस इन्तिज़ार में ज़िद का भी एक पहलू है
किवाड़ खोल दूँ और रास्ता तक्कूँ भी नहीं

तमाम शहर सुने मुझको तेरे होंटों से
तिरे सिवा मैं किसी और पर खुलूँ भी नहीं

वो दूर हो तो लगे उससे कोई रिश्ता है
क़रीब आए तो मैं उसका कुछ लगूँ भी नहीं

करेगा कौन अधूरी तलाश की तकमील ¹
तिरी तलब ² का मिरे सर में अब जुनूँ ³ भी नहीं

न जाने टूट के गिर जाये कब सरो पे 'शकील'
कि आसमाँ की इमारत में इक सुतूँ ⁴ भी नहीं

-
1. पूर्णता
 2. इच्छा
 3. उन्माद
 4. खम्बा

20

धुआँ धुआँ है फ़ज़ा, रौशनी बहुत कम है
सभी से प्यार करो ज़िन्दगी बहुत कम है

मुक़ाम जिसका फ़रिश्तों से भी ज़ियादा था
हमारी ज़ात में वो आदमी बहुत कम है

हमारे गाँव में पत्थर भी रोया करते थे
यहाँ तो फूल में भी ताज़गी बहुत कम है

जहाँ है प्यास वहाँ सब गिलास ख़ाली हैं
जहाँ नदी है वहाँ तिश््रगी [1](#) बहुत कम है

ये मौसमों का नगर है यहाँ के लोगों में
हवस ज़ियादा है और आशिक़ी बहुत कम है

तुम आसमान पे जाना तो चाँद से कहना
जहाँ पे हम हैं वहाँ चाँदनी बहुत कम है

बरत रहा हूँ मैं लफ़्जों को इख़्तिसार ² के साथ
ज़ियादा लिखना है और डायरी बहुत कम है

-
- ¹. प्यास
 - ². संक्षिप्त

21

चाहा, मगर गले से लगाया न जा सका
इतना वो गिर गया कि उठाया न जा सका

कहते हैं एक बार जिसे बद दुआ लगी
उसको किसी दवा से बचाया न जा सका

कोशिश तो उसने की थी बहुत तोड़ने के बाद
लेकिन मुझे दुबारा बनाया न जा सका

जो रेत पर लिखे थे वो लहरों में खो गए
पत्थर पे मैं लिखा था मिटाया न जा सका

मन्ज़र पे मुझको आने में कुछ देर तो लगी
लेकिन जब आ गया तो हटाया न जा सका

होंटों पे आ न पाया तो आँखों में नम हुआ
मैं इश्क़ था किसी से छुपाया न जा सका

मैं जल गया तो राख नहीं कीमिया [1](#) हुआ
मुझको किसी नदी में बहाया न जा सका

[1](#) . प्रभावी दवा

22

मेरे हमराह चलो, मुझपे गुज़ारा कर लो
या हमेशा के लिए मुझसे किनारा कर लो

दर्द हूँ मैं मिरा अन्जाम है आँसू लेकिन
तुम जो चाहो तो मुझे जी के सितारा कर लो

ज़िन्दगी तुमसे न मुझसे ही कटेगी तन्हा
मेरे हो जाओ मुझे अपना सहारा कर लो

टूट कर चाहो मुझे दिल से मुझे याद करो
फिर जिधर चाहो उधर मेरा नज़ारा कर लो

मैं बुरा हूँ मगर अच्छाई भी मुझमें है बहुत
बाद में परखो मुझे पहले गवारा कर लो

23

दरार और तिरे मेरे दरमियाँ आ जाय
तिरी तरह जो मिरे मुँह में भी ज़बाँ आ जाय

लगा-बुझा के बहुत खुश हैं बीच वाले मगर
सफ़ाई दूँ तो पलट कर वो बदगुमाँ आ जाय

अलग हुआ हूँ मैं बिछड़ा नहीं हूँ अपनों से
सदा लगाऊँ तो जंगल में कारवाँ आ जाय

ये और बात कि खुद में सिमट के रहता हूँ
उठाऊँ हाथ तो बाँहों में आसमाँ आ जाय

मैं आबो-दाना के चक्कर में बेठिकाना हूँ

भरूँ उड़ान तो पल भर में आशियाँ आ जाय
ये इत्तेफ़ाक़ नहीं, इश्क़ है, अक़ीदा [1](#) है

उसे मैं दिल से पुकारूँ जहाँ वहाँ आ जाय

मिरे पड़ोस में जलती हैं लकड़ियाँ गीली

न जाने कब मिरे कमरे में भी धुआँ आ जाय

1. श्रद्धा

24

खुदा पे छोड़ा, दुआओं से घर नहीं बाँधा
सफ़र पे निकले तो रखते-सफ़र [1](#) नहीं बाँधा

कमाया जैसे उसी शान से उड़ाया भी
कभी भी नोट पे हमने रबर नहीं बाँधा

सलीका आया नहीं काम-काज का हमको
उठाया बोझ तो कपड़े से सर नहीं बाँधा

निकल गया था मैं उसकी गिरफ़्त में आकर
पकड़ लिया था मगर उसने पर नहीं बाँधा

हुआ फ़साद तो धागा भी रक्षाबन्धन का
मिरी बहन ने मिरे हाथ पर नहीं बाँधा

जो मुझमें जिन थे उन्हें बोतलों में बन्द किया
मगर किसी ने मिरे दिल का डर नहीं बाँधा

नज़र से बाँधा किसी ने, किसी ने चेहरे से
तुम्हारी तर्ह मगर उम्र भर नहीं बाँधा

[1](#) . यात्रा का सामान

25

फूल का शाख पे आना भी बुरा लगता है
तू नहीं है तो ज़माना भी बुरा लगता है

ऊब जाता हूँ खमोशी से भी कुछ देर के बाद
देर तक शोर मचाना भी बुरा लगता है

इतना खोया हुआ रहता हूँ खयालों में तिरे
पास मेरे तिरा आना भी बुरा लगता है

ज़ायका जिस्म का आँखों में सिमट आया है
अब तुझे हाथ लगाना भी बुरा लगता है

मैंने रोते हुए देखा है अली बाबा को
बाज़-औक़ात [1](#) खज़ाना भी बुरा लगता है

अब बिछड़ जा कि बहुत देर से हम साथ में हैं
पेट भर जाए तो खाना भी बुरा लगता है

1. कभी-कभार

26

रेत का घर हूँ, बिखरने से बचा ले मुझको
यूँ न कर तेज़ हवाओं के हवाले मुझको

इस तरह रूठ के मत जा मिरे सूरज मुझसे
कौन सर्दी में ओढ़ाएगा दुशाले मुझको

चल पड़ूँगा तो बहुत दूर निकल जाऊँगा
वक़्त ठहरा है अभी आ के मना ले मुझको

शोर इतना भी नहीं है कि तुझे सुन न सकूँ
दे के आवाज़ मिरे यार बुला ले मुझको

गर बिछड़ना ही मुक़द्दर है तो इससे पहले
अपनी पलकों पे ज़रा देर सजा ले मुझको

मेरे ऐबों पे ज़रा देर को पर्दा रख दे
मैं बुरा हूँ तो भलाई से निभा ले मुझको

27

गिरजों में, मस्जिदों में, शिवालों में रह गया
इन्सान बट के कितने खयालों में रह गया

दुनिया का दर्द कौन समझता, किसे था वक्त
हर शख्स अपने-अपने कमालों में रह गया

खुशबू के सब निशान उड़ा ले गई हवा
इक फूल उसके रेशमी बालों में रह गया

इस बार उसकी आँखों में इतने सवाल थे
मैं भी सवाल बनके सवालों में रह गया

मन्ज़िल से हमकिनार हुए क़ाफ़िले के लोग
और मैं गुबार देखने वालों में रह गया

रस्ते की धूल चाट गई जिस्म का लहू
काँटों का ज़हर पाँव के छालों में रह गया

पीछा छुड़ा सका न मैं अहसासे-जुर्म से
इक दाग तीरगी [1](#) का उजालों में रह गया

[1](#) . अँधेरा

28

चाँद में ढलने, सितारों में निकलने के लिए
मैं तो सूरज हूँ बुझूँगा भी तो जलने के लिए

मन्ज़िलों! तुम ही कुछ आगे की तरफ़ बढ़ जाओ
रास्ता कम है मिरे पाँव को चलने के लिए

ज़िन्दगी अपने सवारों को गिराती जब है
एक मौक़ा भी नहीं देती संभलने के लिए

मैं वो मौसम जो अभी ठीक से छाया भी नहीं
साज़िशें होने लगीं मुझको बदलने के लिए

वो तिरी याद के शोले हों कि अहसास मिरे
कुछ न कुछ आग ज़रूरी है पिघलने के लिए

ये बहाना तिरे दीदार की ख्वाहिश का है
हम जो आते हैं इधर रोज़ टहलने के लिए

महफ़िले-इश्क़ में शम्ओं की ज़रूरत क्या है
दिल को ही मोम बनाते हैं पिघलने के लिए

29

फ़ायदा ढूँढ लो नुक्सानों में क्यों रहते हो
होश वाले हो तो दीवानों में क्यों रहते हो

किस लिए करते हो तुम शहर में जंगल आबाद
जानवर की तरह इन्सानों में क्यों रहते हो

घर के अन्दर किसी आईने में देखो खुद को
खोज में अपनी बयाबानों में क्यों रहते हो

दर्द में खुद ही क़यामत का नशा होता है
ज़ख्म रखते हो तो मयखानों में क्यों रहते हो

जाओ मिट्टी में मिलो, फ़सल बनो, बीज हो तुम
मुँह छुपाए हुए खलियानों में क्यों रहते हो

खुशबुओं का तो हवाओं से बड़ा रिश्ता है
तुम महकते हो तो गुलदानों में क्यों रहते हो

घर का हिस्सा बनो, कुछ बोझ उठाओ घर का
मेज़बानी करो मेहमानों में क्यों रहते हो

30

जहाँ है छत मिरी, दर भी वहीं निकालता हूँ
मैं अपने क़दमों से अपनी ज़मीं निकालता हूँ

खड़ी है फिर कोई दीवार मेरे रस्ते में
लहलुहान मैं फिर से ज़मीं [1](#) निकालता हूँ

ये साँप मेरे गले से लिपटने लगते हैं
मैं अपने कुरते से जब आस्तीं निकालता हूँ

ज़माना हो गया तूने जिसे गिराया था
मैं उस मकान से अब तक मकीं [2](#) निकालता हूँ

ज़लील कर मुझे लेकिन बहुत ज़लील न कर
ये ज़हर मैं भी तो जाकर कहीं निकालता हूँ

ऐ मुम्बई! मैं तुझे वारता हूँ तुझ पर ही
जो तूने मुझको दिया है यहीं निकालता हूँ

नदी भी आज अकेली ही बहना चाहती है
तो मैं भी आज ये कश्ती नहीं निकालता हूँ

-
1. माथा/पेशानी
 2. मकान में रहनेवाला

31

दुनिया इक दरिया है, पार उतरना भी तो है
बेईमानी कर लूँ लेकिन मरना भी तो है

पत्थर हूँ भगवान बना रह सकता हूँ कब तक
रेज़ा-रेज़ा हो के मुझे बिखरन भी तो है

ऐसे मुझको मारो कि क्रांतिल भी ठहरूँ मैं
आखिर ये इल्ज़ाम किसी पे धरना भी तो है

दिल से तुम निकले हो तो कोई और सही कोई और
ये जो ख़ालीपन है इसको भरना भी तो है

बाँध बनाने वालों को मालूम नहीं शायद
पानी जो ठहरा है उसे गुज़रना भी तो है

साहिल वालो! अभी तमाशा ख़त्म नहीं मेरा
डूब रहा हूँ लेकिन मुझे उभरना भी तो है

अच्छी है या बुरी है चाहे जैसी है दुनिया
आया हूँ तो कुछ दिन यहाँ ठहरना भी तो है

32

अपनी हस्ती को मिटा दूँ तिरे जैसा हो जाऊँ
इस तरह चाहूँ तुझे मैं तिरा हिस्सा हो जाऊँ

पायलें बाँध के बारिश की करूँ रक्से-जुनूँ ¹
तू घटा बनके बरस और मैं सह्रा ² हो जाऊँ

दूर तक ठहरा हुआ झील का पानी हूँ मैं
तेरी परछाईं जो पड़ जाए तो दरिया हो जाऊँ

शहर-दर-शहर मिरे इश्क की नौबत बाजे
मैं जहाँ जाऊँ तिरे नाम से रुस्वा हो जाऊँ

आदमी बनके बहुत मैंने तुझे सजदे किए
तू खुदा बन के मुझे मिल मैं फ़रिश्ता हो जाऊँ

इस तरह मिल कि बिछड़ने का तसव्वुर न रहे
इस तरह माँग मुझे तू कि मैं तेरा हो जाऊँ

इतना बीमार कि साँसों से धुआँ उठता है
आ तुझे देख लूँ और देख के अच्छा हो जाऊँ

-
1. उन्माद का नृत्य
 2. रेगिस्तान

33

मुझपे हैं सैकड़ों इल्ज़ाम मिरे साथ न चल
तू भी हो जाएगा बदनाम मिरे साथ न चल

तू नई सुबह के सूरज की है उजली सी किरन
मैं हूँ इक धूल भरी शाम मिरे साथ न चल

अपनी खुशियों को मिरे ग़म से तू मनसूब [1](#) न कर
मुझसे मत माँग मिरा नाम मिरे साथ न चल

इश्क़ करने को कहाँ वक़्त है मज़दूर के पास
मेरे ज़िम्मे हैं बहुत काम मिरे साथ न चल

एक उलझी सी कहानी की तरह हूँ मैं भी
जाने क्या हो मिरा अन्जाम मिरे साथ न चल

तू भी खो जाएगी टपके हुए आँसू की तरह
देख ऐ गर्दिशे-अय्याम [2](#) मिरे साथ न चल

-
1. संबंधित
 2. विपत्ति के दिन

34

तुझको सोचूँ तो तिरे जिस्म की खुशबू आए
मेरी ग़ज़लों में मुहब्बत की तरह तू आए

रात सीने में जले थे तिरी चाहत के दिये
दिल जो पिघला तो मिरी आँख में आँसू आए

क़र्ज़ है मुझपे बहुत रात की तन्हाई का
मेरे कमरे में कोई चाँद न जुगनू आए

लग के सोया है तिरा दर्द मिरे सीने से
सुबह हो जाये कि जज़्बात पे क़ाबू आए

पंख लगने लगे जब दिल ने किया याद उसे
वो बहुत दूर था लेकिन हम उसे छू आए

मैं तिरे नाम पे खामोश रहूँ, सब बोलें
बातों-बातों में कोई ऐसा भी पहलू आए

उसका पैकर [1](#) कई क्रिस्तों में छपे नाविल सा
कभी चेहरा, कभी आँखें, कभी गेसू [2](#) आए

फिर मुझे वज़न किया जाए शहादत [3](#) के लिए
फिर अदालत में कोई लेके तराजू आए

अब के मौसम में ये दीवार भी गिर जाए 'शकील'
इस तरह जिस्म की बुनियाद में आँसू आए

-
- [1](#) . ढाँचा
 - [2](#) . केश
 - [3](#) . गवाही

35

खाते-पीते हुए लोगों में भी गुर्बत 1 रख दी
अबके महँगाई ने हर साँस पे क्रीमत रख दी

आदतें खूब बिगाड़ीं मिरी खुशहाली ने
और जाते हुए जेबों में ज़रूरत रख दी

खुदग़रज़ लोगों की बढ़ती हुई आबादी ने
मिलने-जुलने के अमल में भी तिजारत रख दी

उसने दीवारें उठाई थीं ज़मीने-दिल पर
मैंने दीवारों पे रिश्ते की नई छत रख दी

रात माँ क़ब्र से आई थी मिरे कमरे में
मेरी आँखों में छुपाकर कहीं जन्नत रख दी

शायरी के लिए माँगीं जो दुआएँ मैंने
मेरे मौला ने मिरे दर्द में बरकत रख दी

मैं था सिमटा हुआ गुमनामी की चादर में 'शकील'
उसने फैला के मिरे नाम की शोहरत रख दी

[1](#) . गरीबी

36

हमको जज़्बात का इज़हार न करना आया
प्यार करते रहे इक्रार न करना आया

जिनको दिल जान के ले आए वो पत्थर निकले
हमको बाज़ार से बाज़ार न करना आया

ठोक़रें खाते रहे एक ही पत्थर से सदा ¹
अपना रस्ता हमें हमवार ² न करना आया

घर बनाने को ज़मीं कम तो न थी दुनिया में
कुछ हमें ही दरो-दीवार न करना आया

हम भी ज़ख्मों को सजा सकते थे चेहरे पे 'शकील'
खुद को लेकिन हमें अखबार न करना आया

¹ . हमेशा
² . समतल

37

मेरी ख्वाहिश, मिरी चाहत से ज़ियादा कुछ था
वो मिरे साथ ज़रूरत से ज़ियादा कुछ था

जल गया मैं भी तिरे साथ चिता पर तेरी
ये अमल मेरा मुहब्बत से ज़ियादा कुछ था

अशक टपका तो धुआँ उठने लगा दामन से
दिल में ये क्या था जो वह्शत [1](#) से ज़ियादा कुछ था

खो दिया खुद को तुझे पाने की खातिर मैंने
ये सफ़र मेरा इबादत से ज़ियादा कुछ था

माँ के क़दमों तले जन्नत है सुना था मैंने
और जब समझा तो जन्नत से ज़ियादा कुछ था

मैंने मेहनत भी बहुत की थी, मगर मेरे खुदा
जो दिया तूने वो मेहनत से ज़ियादा कुछ था

खुद को उलझा लिया उसने मुझे सुलझाते हुए
वो परेशाँ मिरी हालत से ज़ियादा कुछ था

[1](#). उन्माद

38

हकीकत थी मगर अब तो कहानी हो गई दुनिया
नज़र में आ गई जब से पुरानी हो गई दुनिया

मिली तो कुछ दिनों तक मुस्कुराई दिल से होंटों तक
मगर जब खोई तो आँखों में पानी हो गई दुनिया

कभी बचपन में मेरे साथ कच्चे खेला करती थी
मैं अब तक हूँ वही बच्चा सियानी हो गई दुनिया

बदन पहले भी उसका लहलहाता था, महकता था
दुपट्टा ओढ़कर कुछ और धानी हो गई दुनिया

सड़क पर थी तो इक बाज़ार का सामान लगती थी
मगर जब आ गई घर में तो रानी हो गई दुनिया

अभी कुछ देर पहले तक मिरी आँखों में चुभती थी
तिरी इक मुस्कुराहट से सुहानी हो गई दुनिया

39

इक दूजे की आग में जलना अच्छा लगता है
साथी हो तो पैदल चलना अच्छा लगता है

मयखाने से उसकी गली तक आने-जाने में
खुद ही गिरना और सँभलना अच्छा लगता है

पाने से भी कुछ ज़्यादा है बात न पाने में
तेरी तलब में दिल का मचलना अच्छा लगता है

दस्ते-दुआ [1](#) पर फूँक के अक्सर नामे-खुदा के साथ
नाम तिरा चेहरे पर मलना अच्छा लगता है

मिलना-जुलना बन्द है लेकिन अब भी जाने क्यूँ
शाम ढले तो घर से निकलना अच्छा लगता है

बर्फ़ सा मेरे दिल का तेरे ग़म के मौसम में
जम जाना और जम के पिघलना अच्छा लगता है

मेरा भी तो कुछ रिश्ता है चाँद-सितारों से
सूरज हूँ पर शाम को ढलना अच्छा लगता है

1. दुआ का हाथ

40

आँखों से मेरे दर्द को बहना नहीं पड़ा
उसने य़ुँही समझ लिया कहना नहीं पड़ा

इक बार अपने दिल की सदा पर निकल पड़े
पाबन्दियों में फिर हमें रहना नहीं पड़ा

हम जब उदासियों से मिले मुस्कुरा दिए
ग़म को खुशी बना लिया, सहना नहीं पड़ा

सोना भी कुछ उदास था चाँदी भी ग़मज़दा
जब तक बदन पे प्यार का ग़हना नहीं पड़ा

वो बेलिबास आइनाखाने में था मगर
शीशे पे उसका अक्स बरहना ¹ नहीं पड़ा

सदियों से मैं ग़रीब घराने का हूँ मकान
सब घर बदल गए मुझे ढहना नहीं पड़ा

1. नग्न

41

कमाल देखो दुआओं से गुल खिलाने का
खयाल छोड़ो फ़कीरों को आजमाने का

सजा रहा है कोई आसमाँ की पलकों को
हुआ है वक्रत सितारों के झिलमिलाने का

तलाश तुमको ही करनी हैं मन्ज़िलें अपनी
हमारा काम है बस रास्ता बताने का

सभी थे भूले हुए अपने-अपने चेहरे को
सो हमने जुर्म किया आइना दिखाने का

कभी-कभी तो तअल्लुक भी टूट जाते हैं
अजीब खेल है ये रूठने मनाने का

42

चराग़ बनके हवाओं की मेज़बानी की
ज़मीन हमने बहुत तेरी पासबानी [1](#) की

चुकानी पड़ती हैं और वो भी रोज़ क्रिस्तों में
अजीब क़ीमतें होती हैं मेहबानी की

तुम्हारे दर्द से लेकर हमारे आँसू तक
बड़ी तवील [2](#) कहानी है आग-पानी की

तमाम रिश्तों में इक गाँठ पड़ती जाती है
हवाएँ चलती हैं ज़ेहनों में बदगुमानी [3](#) की

फ़ज़ा ख़राब है लेकिन बहुत ख़राब नहीं
बस इक ज़रा सी ज़रूरत है सावधानी की

जो डोर में भी नहीं थे उन्हीं पतंगों ने
हवा मिली तो बहुत बात आसमानी की

-
1. रखवाली
 2. लम्बी
 3. बुरी धारणा

43

नाउमीदी में उमीदों का सफ़र जारी है
फूल की चाह में काँटों का सफ़र जारी है

अब भी कुछ ख़्वाब भटकते हैं खुली सड़कों पर
अब भी टूटे हुए रिश्तों का सफ़र जारी है

अब भी इक हाथ हवाओं में हिला करता है
अब भी बेशक्ल सदाओं का सफ़र जारी है

अब भी उड़ता है ख़यालों में धुआँ माज़ी [1](#) का
ब भी बेनाम अज़ाबों [2](#) का सफ़र जारी है

अब भी दीवार के उस पार से आती है सदा [3](#)
अब भी वीराने में रूहों का सफ़र जारी है

अब भी इक टूटे हुए ख़्वाब से रिश्ता है मिरा
अब भी भीगी हुई रातों का सफ़र जारी है

गीत गाती है मिरे गाँव में सावन की फुहार
नीम के पेड़ पे झूलों का सफ़र जारी है

-
1. भूतकाल
 2. पाप कष्टों
 3. आवाज़

44

ख्वाब देखो, कोई ख्वाहिश तो करो
जीना आसान है, कोशिश तो करो

आज भी प्यार है दुनिया में बहुत
जोड़कर हाथ गुज़ारिश तो करो

जंग ये जीती भी जा सकती है
ज़िन्दगी से कोई साज़िश तो करो

सब्ज़ओ-गुल [1](#) हैं इसी खाक तले
बनके बादल कभी बारिश तो करो

लोग मरहम भी लगायेंगे 'शकील'
पहले ज़ख्मों की नुमाइश तो करो

[1](#) . हरियाली और फूल

45

नदी, पहाड़, समुन्दर, हवा में बट जाओ
बहुत बड़ी है ये दुनिया जड़ों से कट जाओ

हिसाब माँग रही है ज़मीं ठहरने का
जहाँ खड़े हो मिरी जाँ वहाँ से हट जाओ

यही तरीक़े हमेशा रहे हैं जीने के
बढ़ा लो चादरें या खुद में ही सिमट जाओ

इस अंजुमन [1](#) में हर इक आदमी अकेला है
अँधेरा हो तो किसी जिस्म से लिपट जाओ

तमाम रात तो सो कर गुज़ार दी तुमने
सवेरा हो गया अब नींद से उचट जाओ

दुआएँ माँग रहा हूँ मैं बारिशों के लिए
मिरे लबो! मिरे खेतों की तर्ह फट जाओ

यहाँ से आगे कोई रास्ता नहीं जाता
अब अपने-अपने घरों की तरफ पलट जाओ

उजाले बाँटते फिरते हो शहर भर में 'शकील'
चरागा लेके कभी अपने भी निकट जाओ

46

जहर या नशा हो तुम
दर्द की दवा हो तुम

ज़िन्दगी के सहारा में
शबनमी हवा हो तुम

आँधियों की रातों में
आखिरी दिया हो तुम

मौत जैसी दुनिया में
जीने की अदा हो तुम

मैं मुसाफ़िर आवारा
मेरा रास्ता हो तुम

47

सभी है झूटे तो सच मैं ही बोल कर देखूँ
बड़ा अंधेरा है लेकिन टटोल कर देखूँ

मिरा चराग़ बुझेगा या रौशनी होगी
हवा के साथ ये झगड़ा भी मोल कर देखूँ

पता चले कि मिरा शहर कितना बेहिस [1](#) है
फ़ज़ा में ज़हर किसी रोज़ घोल कर देखूँ

ये देखना है वो कितना करीब आता है
उस अजनबी से ज़रा मेल-जोल कर देखूँ

पकड़ रखे हैं कई ख़्वाब मेरी आँखों ने
जो नींद आए तो दरवाज़ा खोल कर देखूँ

सुना है इश्क़ में दीवानगी ज़रूरी है
तू एक लय में बदल, मैं भी डोल कर देखूँ

तू ज़िन्दगी है तो हो जाऊँ मैं फ़ना तुझमें
तू फ़िल्म है तो कोई मैं भी रोल कर देखूँ

[1](#) . संवेदनाहीन

48

तुम क्या मिले कि हम भी ग़ज़लियार हो गए
दो चार शेर कह के ज़मींदार हो गए

सूरज से मैंने हाथ मिलाकर बुरा किया
साये सभी मकान के उस पार हो गए

टकरा गई थी यूँ ही हवा बादबान से
कश्ती के सारे लोग ख़बरदार हो गए

जंगल कटे तो रात मकानों में आ घुसी
रस्ते तिरी गली के पुरअसरार [1](#) हो गए

रंगों के बाद नीवं इमारत में खो गई
बादल ज़मीं पे टूट के बेकार हो गए

अब कश्तियों का तैरते रहना मुहाल [2](#) है
साहिल [3](#) नदी में डूब के जीदार [4](#) हो गए

खेतों में ईंट बाने का दस्तूर चल पड़ा
अब छोटे मोटे गाँव भी बाज़ार हो गए

-
1. भेद भरे
 2. कठिन
 3. किनारे
 4. साहसी

49

इसी ज़मीन की आवाज़ आसमान में थी
हमारी आह कभी उसकी दास्तान में थी

हम अपने घर में अकेले थे अपने जिस्म के साथ
हमारी रूह किसी और के मकान में थी

अब उसकी राख भी उड़ती नहीं खयालों में
वो आरजू जो मुहब्बत के सायबान में थी

खुदा करे कि नई नस्ल उससे दूर रहे
वो दुश्मनी जो तिरे मिरे खानदान में थी

तुम्हारी मौत ने मारा है जीते जी हमको
हमारी जान भी जैसे तुम्हारी जान में थी

ज़रा सा और था टीलों के रास्तों का सफ़र
फिर उसके बाद हर इक रहगुज़र ढलान में थी

तमाम जिस्म ही डूबा हुआ था मस्ती में
सफ़र के बाद अजब कैफ़ियत [1](#) थकान में थी

उसे शऊर की तल्लखी [2](#) में ढूँढता हूँ 'शकील'
वो चाश्री जो मिरी तोतली ज़बान में थी

[1](#) . मनोदशा
[2](#) . कड़वाहट

50

तेरी फ़र्क़त [1](#) मिरी तक्रदीर नहीं थी पहले
मेरे कमरे में ये तस्वीर नहीं थी पहले

दिल धड़कता था मगर तेरी सदाओं के बग़ैर
दर्द पहले भी था तासीर नहीं थी पहले

तुझसे बिछड़ा तो मुझे प्यार किया दुनिया ने
ये मुहब्बत मिरी जागीर नहीं थी पहले

हमसे पहले भी ग़ज़ल वाले बहुत रोए मगर
इतनी संगीन ये ताज़ीर [2](#) नहीं थी पहले

जाने किस तरह मुहब्बत के पयाम [3](#) आते थे
कोई काग़ज कोई तहरीर [4](#) नहीं थी पहले

उम्र कच्ची थी तो निंदें भी मज़ा देती थीं
ज़िंदगी ख़्वाब की ताबीर नहीं थी पहले

कितनी आज़ादी से हम घूमते-फिरते थे 'शकील'
कोई दीवार या ज़न्जीर नहीं थी पहले

-
1. जुदाई
 2. सज़ा
 3. सन्देश
 4. लिखावट

51

ऐसे जंगल में वो अकेली है
कोई लड़की है या पहेली है

आगे परियों का देस हो शायद
दूर तक राह में चमेली है

उसमें सदियों से भूत रहते हैं
गाँव के पास जो हवेली है

मुझको मुखिया का क़त्ल करना है
और गिरवी मिरी हथेली है

अब भी सोते में ऐसा लगता है
सर के नीचे तिरी हथेली है

आओ! अब हम भी डूब जाते हैं
यार लोगों ने नाव खे ली है

एक दिन तेरे साथ देखा था
क्या ग़ज़ल भी तिरी सहेली है

इसका लहजा तुम्हारे जैसा है
ये ग़ज़ल हमने चाँद से ली है

रंग के तजरबे में हमने 'शकील'
एक तितली की जान ले ली है

52

इश्क़ में खुद को शरअंगेज़ 1 नहीं कर लेते
ज़ख्म जो होता तो खूरेज़ 2 नहीं कर लेते

हमको तस्वीर सजानी ही नहीं थी वरना
जिस पे सोए थे उसे मेज़ नहीं कर लेते

चाहते हम भी थे कतराके निकल जाओ तुम
वरना रफ़्तार को हम तेज़ नहीं कर लेते

मारना ही जो तुम्हें होता, तो क्या अपने हाथ
हम कोई भाड़े का चंगेज़ नहीं कर लेते

सिर्फ़ घोड़े ही विरासत में मिले हैं हमको
पाँव भी होते तो महमेज़ 3 नहीं कर लेते

मिलती जो आबो-हवा छोड़ के क्यूँ जाते हम
अपनी मिट्टी को ही ज़रखेज़ 4 नहीं कर लेते

खुश अगर होते तो मयखाने में क्यों आते हम
आप ही आप को लबरेज़ [5](#) नहीं कर लेते

अच्छा होने के लिए कौन दवा खाता है
वरना कैसा भी था परहेज़ नहीं कर लेते

-
- [1](#) . उपद्रवी
 - [2](#) . हिंसक
 - [3](#) . विकृत
 - [4](#) . उपजाऊ
 - [5](#) . पूरा भरा

53

सर पे सूरज लिए खड़ा हूँ मैं
अपनी परछाई से बड़ा हूँ मैं

किसी पत्थर से टूटता भी नहीं
जाने किस फ्रेम में जड़ा हूँ मैं

अपने चेहरे के धुंदलेपन के लिए
कितने आईनों से लड़ा हूँ मैं

अब तो खुश हो, कि हार मेरी हुई
हाथ बाँधे हुए खड़ा हूँ मैं

मेरी मिट्टी बुला रही है मुझे
जाने किस खाक में गड़ा हूँ मैं

फिर मुखालिफ़ [1](#) हैं सारे लोग मिरे
फिर किसी बात पर अड़ा हूँ मैं

ऊँगलियाँ उठ रही हैं मुझपे 'शकील'
जाने किस सिम्त [2](#) चल पड़ा हूँ मैं

[1](#) . विरोधी

[2](#) . दिशा

54

कमा के पूरा किया जितना भी खसारा 1 था
वहीं से जीत के निकला जहाँ मैं हारा था

न मेरे चेहरे पे दाढ़ी, न सर पे चोटी थी
मगर फ़साद ने पत्थर मुझे भी मारा था

जहाँ पे लोग मिरी जान लेना चाहते थे
उसी गली से गुज़रना मुझे दुबारा था

हवा चली तो मुझे उसने फिर किया रौशन
बचा हुआ जो मिरी राख में शरारा 2 था

कहानी सुनते हुए बुझ गई थीं सब आँखें
जो जल रहा था मिरे साथ इक सितारा था

जहाँ से देख रहा था मैं बहते दरिया को
वहीं से टूट के गिरता हुआ किनारा था

कई मकान थे लेकिन खुला न मुझ पे कोई
हर इक मकान पे मैंने तुझे पुकारा था

-
1. नुक्सान
 2. चिंगारी

55

अशक किसका है जो पुरजोश ¹ हुआ जाता है
शहर का शहर ज़मींदोश ² हुआ जाता है

सिर्फ़ बातों से ही मैं कितना भरम रक्खूँगा
सामने आ कि मुझे होश हुआ जाता है

एक कोहरा है जो छाया है सभी आँखों पर
एक मन्ज़र है जो रूपोश ³ हुआ जाता है

अब कोई चीज़ नहीं चुभती मिरे तलवे में
पाँव ही पाँव का पापोश ⁴ हुआ जाता है

किस तरह भरते हुए ज़ख्म को ताज़ा रक्खूँ
सारा क्रिस्सा ही फ़रामोश ⁵ हुआ जाता है

इतनी छलकाई है मट्फ़िल में गुलाबी उसने
जो भी आता है वो मदहोश हुआ जाता है

हमसे मयकश कहाँ बैठें तिरे मयखाने में
हर शराबी ही बलानोश ⁶ हुआ जाता है

कुछ तो रफ़्तार भी कछुवे की तरह है अपनी
और कुछ वक्रत भी खरगोश हुआ जाता है

दरो-दीवार लिए बैठे हैं किसकी बातें
हर दरीचा ⁷ हमातनगोश ⁸ हुआ जाता है

सोने वाले हमें क्रिस्सा तो सुनाते पूरा
यार ऐसे कहीं खामोश हुआ जाता है

दिल में रखते है खज़ाने की तमन्ना लेकिन
पहले दरिया से हमआगोश ⁹ हुआ जाता है

-
- ¹ . उत्साह भरा
 - ² . धराशायी
 - ³ . ग़ायब
 - ⁴ . जूता
 - ⁵ . भूला
 - ⁶ . अधिक शराब पीने वाला
 - ⁷ . खिड़की
 - ⁸ . पूरे शरीर को कान बनाकर सुनना
 - ⁹ . आलिंगित

56

जब सुनी कोई भी आहट तिरी आहट की तरह
सज गए ख़्वाब निगाहों में सजावट की तरह

रख दिया उसने मिरे जख़्म पे मरहम ऐसे
दर्द करवट भी बदल पाया न करवट की तरह

मैं तिरी फ़िक्र हूँ तू जब भी मुझे सोचेगा
तेरे माथे पे उभर आऊँगा सिलवट की तरह

खाकसारी ¹ की भी इक हद है, इसे ज़ेहन में रख
हद से बढ़ जाए तो लगती है बनावट की तरह

तपते सह्रा की तरह है मिरे होंटों की तपिश
उसकी आँखों का समौँ है किसी पनघट की तरह

दमबख़ुद ² रह गई दीदार की हसरत भी 'शकील'
उसने जब काम लिया जुल्फ़ से घूँघट की तरह

-
1. विनम्रता
 2. चकित

57

सच वो क़तरा जो गुहर [1](#) हो ही नहीं सकता था
इस कमाई से तो घर हो ही नहीं सकता था

वो तो तुम आबो-हवा लाए कि आबाद हुआ
इस ख़राबे में नगर हो ही नहीं सकता था

ये तिरे लम्स [2](#) की गर्मी है जो हम चल निकले
ऐसी सर्दी में सफ़र हो ही नहीं सकता था

मोम से मेरा तअल्लुक़ था तिरा शोलों से
अपना इक साथ गुज़र हो ही नहीं सकता था

उस तरफ़ लोग गुनहगार भी थे, अपने भी
मैं किसी तर्ह उधर हो ही नहीं सकता था

शाह को उसके पियादों से लड़ाया मैंने
वरना ये मार्का [3](#) सर हो ही नहीं सकता था

सिलसिला मेरा था सूरज के घराने से 'शकील'
मुझपे आँधी का असर हो ही नहीं सकता था

-
1. मोती
 2. स्पर्श
 3. मोर्चा

58

दूरियाँ बढ़ती गई, चिट्ठी का रिश्ता रह गया
सब गए परदेस घर में बाप तन्हा रह गया

छोटे-छोटे रास्ते शहरों में जाकर खो गए
गाँव अपने साथियों की राह तकता रह गया

गर्मियों की छुट्टियों में भी न आया घर कोई
धीरे-धीरे पेड़ पर ही आम पकता रह गया

अब कहाँ है द्वार पर बैलों की घन्टी का समाँ
खेत तो अबके बरस भी गिरवी रक्खा रह गया

नीम बारिश में गिरा, आँधी में जामुन गिर गई
एक पीपल सब रुतों के वार सहता रह गया

नाव कागज़ की न अबके छपकियाँ बच्चों की थीं
बाढ़ का पानी गली में यूँही बहता रह गया

59

एक सूराख सा कश्ती में हुआ चाहता है
सब असासा 1 मिरा पानी में बहा चाहता है

मुझको बिखराया गया और समेटा भी गया
जाने अब क्या मिरी मिट्टी से खुदा चाहता है

टहनियाँ खुश्क हुई, झड़ गए पत्ते सारे
फिर भी सूरज मिरे पौदे का भला चाहता है

टूट जाता हूँ मैं हर साल मरम्मत करके
और घर है कि मिरे सर पे गिरा चाहता है

सिर्फ मैं ही नहीं सब डरते हैं तन्हाई से
तीरगी 2 रौशनी, वीराना सदा 3 चाहता है

दिन सफ़र कर चुका अब रात की बारी है 'शकील'
नींद आने को है, दरवाज़ा लगा चाहता है

-
1. પૂજી
 2. અંધેરા
 3. આવાજ

60

जाने वाले कहानियाँ रख दे
कुछ तो अपनी निशानियाँ रख दे

होंट खामोश हैं कई दिन से
इन गुलाबों पे तितलियाँ रख दे

या कोई ख्वाब दे निगाहों को
या दरीचे पे उँगलियाँ रख दे

हमसे मिलना है तो करीब से मिल
या तअल्लुक में दूरियाँ रख दे

तेरे बिन रेत का मकान हूँ मैं
मुझ में थोड़ी सी आँधियाँ रख दे

एक झोंका हवा का यूँ आए
खोलकर सारी खिड़कियाँ रख दे

मेरे ख़्वाबों को तोड़कर कोई
मेरी आँखों में किरचियाँ रख दे

अब जवानी हिसाब माँगती है
मेरे चेहरे पे झुर्रियाँ रख दे

61

बुझी-बुझी थी रौशनी, धुआँ-धुआँ चराग़ थे
हवा उन्हें कतर गई जो बेमकाँ 1 चराग़ थे

लहू में एक नूर था जो बह रहा था जंग में
जो कट गए वो सर न थे रवाँ-दवाँ 2 चराग़ थे

गुज़र गई जब आँधियाँ तो कुछ नहीं मिला कहीं
पता भी कुछ न चल सका कहाँ-कहाँ चराग़ थे

लबों में दफ़्न हो गई यहाँ कई गवाहियाँ
जो वक़्त पर न जल सके वो बेज़बाँ चराग़ थे

कहानियाँ सुनाई थीं न जाने कैसी ताक़ 3 ने
घरों की बन्द खिड़कियों से बदगुमाँ 4 चराग़ थे

ज़रूरतों की आँख से मिला रहे थे आँख हम
जहाँ-जहाँ पे रात थी वहाँ-वहाँ चराग़ थे

ये और बात तीरगी 5 ने काम अपना कर दिया
ये और बात तेरे-मेरे दरमियाँ चराग थे

-
- 1 . बेघर
 - 2 . चलते-फिरते
 - 3 . दीवार में चराग रखने की जगह
 - 4 . बुरी धारणा रखने वाला
 - 5 . अंधेरा

62

जब तलक इश्क़ में पागल न हुआ
मैं अधूरा था मुकम्मल न हुआ

उसका रिश्ता था मिरी प्यास के साथ
जो मिरी धूप में बादल न हुआ

मिट गए उसके निशाँ राहों से
वो मगर आँख से ओझल न हुआ

वो धुआँ बनके फिरा आवारा
जो तिरी आँख का काजल न हुआ

बिक गए दाम घटा कर कुछ लोग
और मैं सोने से पीतल न हुआ

63

ज़िन्दगी की नई उड़ान थे हम
अपनी मिट्टी में आसमान थे हम

चाँद ने रात घर पे दस्तक दी
रात भर उसके मेज़बान थे हम

ढह गए इक ज़रा हवा जो चली
क्या करें रेत के मकान थे हम

जब तलक उसने हमसे बातें कीं
जैसे फूलों के दरमियान थे हम

उसको चुप-चाप सुन लिया हमने
जैसे सचमुच के बेज़बान थे हम

जिससे मिलती थी झूट की सरहद
उस हकीकत से बदगुमान थे हम

लोग समझे नहीं हमें शायद
मस्जिदों से उठी अज़ान थे हम

64

वो चाहतों के समुन्दर वो प्यास-प्यास बदन
मिले तो आज बहुत खुश थे दो उदास बदन

फ़ज़ा में चारों तरफ़ इक नशा सा फैला था
ज़माने बाद मिले थे बदन-शनास [1](#) बदन

पिघल के सोने की इक तह जमी थी कमरे में
चमक रहा था अँधेरे में बेलिबास [2](#) बदन

कहीं जो बाँहों में आए तो आग लग जाए
वो उँगलियों में फिसलता हुआ कपास बदन

वो चार पैग की मस्ती, वो ख्वाहिशों का ख़ुमार
वो रत्नस [3](#) करते हुए मेरे आस-पास बदन

नशे में एक ही हम्माम के हुए सारे
निगाहे-आम से खुलने लगे थे खास बदन

हमारे होंट भी सैराब ⁴ हो गए इक दिन
छलक रहा था बहुत भरके वो गिलास बदन

ज़बान फेरूँ तो अब भी लहू मचलता है
लबों पे छोड़ गया था कभी मिठास बदन

हवा में घुल के महकने लगा था साँसों में
सहर की ओस में भीगा हुआ वो घास बदन

-
1. देह परिचित
 2. निर्वस्त्र
 3. नृत्य
 4. तृप्त

65

दूर तक दिल के सह्रा में बारिश हुई
तुमको देखा तो जीने की ख्वाहिश हुई

हम खिले तो हवाओं ने बिखरा दिया
हम जले तो बुझाने की साज़िश हुई

हर क़दम पर लगा कोई पत्थर हमें
हर क़दम इक नई आज़माइश हुई

सच को सच झूट को झूट हमने कहा
बस इसी बात पर सबसे रन्जिश हुई

दर्द को पी लिया, ज़ख़्म को सी लिया
हमसे कब आँसुओं की नुमाइश हुई

66

तिरी ज़मीं में मुहब्बत के बीज बो न सकूँ
तू मिल भी जाए तो शायद मैं तेरा हो न सकूँ

ग़मे-हयात ¹ तू चुपके से खुदकुशी कर ले
मैं अपने हाथों से शायद तुझे डुबो न सकूँ

ये मेरे अशक किसी और की अमानत हैं
अगर मैं रोना भी चाहूँ तो खुलके रो न सकूँ

ये बेवफ़ाई तो पहले से मेरे ध्यान में थी
वो दाग़ दे कि जिसे उम्र भर मैं धो न सकूँ

तमाम दिन तुझे ढूँढ़ूँ तिरा पता न चले
तमाम रात इसी रन्ज में मैं सो न सकूँ

तू अपना ग़म भी मुझे दे कि रात धुल जाए
मैं अपने दर्द से मुमकिन है इतना रो न सकूँ

तिरा बयान किसी नज़्म में करूँगा कभी
ग़ज़ल की आँख में शायद तुझे समो न सकूँ

[1](#). जीवन व्यथा

67

खेतों-खेतों हुन बरसे नलकूप चले
गेहूँ से हर घर भर जाये सूप चले

सूरज निकले कोहरा ओढ़े सर्दी में
शर्मीली दुल्हन के जैसी धूप चले

सारे अच्छे मन्ज़र भर लूँ आँखों में
पन्छी गाए, गुल मुस्काए, रूप चले

चाँद सितारो! मैं ही क्यों तुम जैसा हूँ
दुनिया धारे रूप में सौ बहुरूप चले

बाहर सब ने रुख मोड़ा था दरिया का
पानी में सब दरिया के अनुरूप चले

दिल में रख ले मुझे, अरमान बना ले मुझको
जिस्म मिट्टी है तिरा जान बना ले मुझको

ग़ैर से देख मुझे तेरा ही चेहरा हूँ मैं
आइना तोड़ दे पहचान बना ले मुझको

चाहता है तो मुझे ढूँढ परेशाँ होकर
मैं मिलूंगा तुझे ईमान बना ले मुझको

हमसफ़र होने का दर्जा जो नहीं दे सकता
अपने रस्ते का तू सामान बना ले मुझको

जान दे दूँगा मिरी जान हिफ़ाज़त में तिरी
तू जो दिल्ली है तो सुलतान बना ले मुझको

69

धड़कनों में किसी दस्तक की सदा 1 हो जैसे
दिल का दरवाज़ा कोई खोल रहा हो जैसे

जाने किस मोड़ पे ये वह्म हकीकत बन जाय
मेरे पीछे कोई साया सा लगा हो जैसे

लम्स 2 अहसास को कुछ ऐसे हवा देता है
वो मुझे अपना बदन सौंप गया हो जैसे

फ़िक्र मेरी किसी मज़दूर के घर की चौखट
जिस्म मेरा कहीं रस्ते में पड़ा हो जैसे

ऐसा लगता है खिले फूल पे शबनम 3 का वजूद
उसके होंटों पे मिरे हक़ में दुआ हो जैसे

यूँ मचलती हैं समाअत 4 पे हवा की लहरें
उसने चुपके से मिरा नाम लिया हो जैसे

यूँ समाया है हवाओं में बदन खुशबू का
रुह में ग़म कोई तहलील ⁵ हुआ हो जैसे

देख लेता है मुझे वो भी कनअंखियों से 'शकील'
मेरे मन में भी कोई चोर छुपा हो जैसे

-
1. आवाज़
 2. स्पर्श
 3. ओस
 4. श्रवण बोध
 5. विलयन/घुलना

70

धूप से बरसरे-पैकार [1](#) किया है मैंने
अपने ही जिस्म को दीवार किया है मैंने

जब भी सैलाब मिरे सर की तरफ़ आया है
अपने हाथों को ही पतवार किया है मैंने

जो परिन्दे मिरी आँखों से निकल भागे थे
उनको लफ़्ज़ों में गिरफ़्तार किया है मैंने

पहले इक शहर तिरी याद से आबाद किया
फिर उसी शहर को मिसमार [2](#) किया है मैंने

बारहा [3](#) गुल से जलाया है गुलिस्तानों को
बारहा आग को गुलज़ार [4](#) किया है मैंने

जानता हूँ कि मुझे क़त्ल किया जाएगा
ख़ुद को सच कहके गुनहगार किया है मैंने

-
1. सामना
 2. ध्वस्त
 3. बार-बार
 4. पुष्पित

71

बुझ गई आँखें मिरी, हर रंग सादा हो गया
तकते-तकते राह तेरी चाँद आधा हो गया

एक थे तो हम मुकम्मल थे, जुदा जैसे हुए
वो भी आधा हो गया और मैं भी आधा हो गया

अब कहाँ रंगीन कपड़े, अब कहाँ बालों में फूल
हो गया बेरंग वो भी मैं भी सादा हो गया

मेरा कोई वज़न था मुझमें, न था कोई शुमार
तुझमें शामिल हो के लेकिन मैं ज़ियादा हो गया

बच के चलना था कि ये जम्हूरियत ¹ की थी बिसात ²
इक ग़लत खेली हुई तो शाह प्यादा हो गया

¹ . लोकतंत्र

² . बाज़ी

72

मैं भी तन्हा हूँ, अकेली सी लगे है वो भी
अपनी आँखों में पहेली सी लगे है वो भी

मेरे अन्दर भी खमोशी है मज़ारों जैसी
एक वीरान हवेली सी लगे है वो भी

मैं भी जलता हूँ चरागों की तरह कमरे में
अपने आँगन में चमेली सी लगे है वो भी

रास्ता भूला हुआ हूँ कोई शहज़ादा मैं
और परियों की सहेली सी लगे है वो भी

मेरी आँखों में महकता है हिनाई ¹ मौसम
अपनी रंगीन हथेली सी लगे है वो भी

गाँव के मेले में इक आशिक़े-दिलफेंक सा मैं
और इक नार नवेली सी लगे है वो भी

गमछा बाँधूँ तो लगूँ मैं भी बनारस जैसा
झुमका पहने तो बरेली सी लगे है वो भी

[1](#). मेहंदी वाला

73

शहर में कोई ऐसा हो
तुमसे मिलता जुलता हो

किससे दिल का हाल कहें
घर में कोई अपना हो

आँखों में जब नींद आये
बस तेरा ही सपना हो

मेरे नाम की तख्ती पर
तेरा नाम भी लिक्खा हो

चाँद को ऐसे तकता हूँ
जैसे तेरा चेहरा हो

इस जंगल उस बस्ती के
बीच में कोई रस्ता हो

खिड़की खोल के देखो तो
शायद जुगनू आया हो

इक मौसम ऐसा आये
क्रतरा-क्रतरा दरिया हो

मिले सभी से मगर कब सभी के साथ रहे
हमें भला जो लगा हम उसी के साथ रहे

तिरी गली हो कि मयखाने की गुज़रगाहें
हर इक मक़ाम पे हम बेखुदी के साथ रहे

इबादतों में भी रिश्ता रहा गुनाहों से
कभी फ़रिश्ता कभी आदमी के साथ रहे

जो सीधी राह चले उनको ज़िन्दगी न मिली
भटक गये जो वही ज़िन्दगी के साथ रहे

तिरा खयाल अँधेरे में आ गया था हमें
तमाम रात हम इक रौशनी के साथ रहे

75

छाँव में रह के मिरी प्यास न मर जाए कहीं
ज़ख्म भर जाने से अहसास न मर जाए कहीं

मेरी बहती हुई आँखों में तिरे ख़्वाब की फ़सल
बाढ़ के पानी में ये घास न मर जाए कहीं

आके लेजा! कि बहुत शोर है दिल में मेरे
तेरी तन्हाई मिरे पास न मर जाए कहीं

घोंसला देख के जागी है मकाँ की ख़्वाहिश
सोचता हूँ मिरा बनबास न मर जाए कहीं

ऐसी मायूसी कि बरसों से हँसी आई नहीं
ज़िन्दगी मुझमें तिरी आस न मर जाए कहीं

वो खिला हो तो उसे छूने से डर लगता है
हाथ की गर्मी से बू-बास [1](#) न मर जाए कहीं

1. सुगन्ध

76

ज़रा से ग़म के लिये जान से गुज़र जाना
मुहब्बतों में ज़रूरी नहीं है मर जाना

कभी लिहाज़ न रक्खा किसी रिवायत का
जो जी में आया उसे हमने मोतबर [1](#) जाना

वो रेत-रेत फ़ज़ा में तिरी सदा [2](#) का सराब [3](#)
वो बेइरादा मिरा राह में ठहर जाना

तमाम रात भटकना तिरे तआकुब [4](#) में
तिरे खयाल की सब सीढ़ियाँ उतर जाना

वो मन में चोर लिये फिरना तेरे साये का
गली के मोड़ पे दीवारो-दर से डर जाना

‘शकील’ गाँव में सब लोग सो गये होंगे
अब इतनी रात को अच्छा नहीं है घर जाना

-
1. विश्वस्त
 2. आवाज़
 3. मरीचिका
 4. पीछा करना

सर गये क़ब्र में दस्तार पड़ी है घर में
इक विरासत है जो बेकार पड़ी है घर में

धूल उड़ाती है हवा जंग के मैदानों में
जंग खाती हुई तलवार पड़ी है घर में

कश्तियाँ बह गई सैलाब है चारों जानिब
एक टूटी हुई पतवार पड़ी है घर में

हमने आँखों में छुपा रखी थी बहार की घटा
अब जो बरसी है तो बौछार पड़ी है घर में

मैं इधर रहता हूँ टूटे हुए आईने सा
एक सूरत है जो उसपार पड़ी है घर में

मैं कहीं खोया हुआ हूँ किसी पाज़ेब के साथ
और बिखरी हुई झनकार पड़ी है घर में

एक चौखट से ही सब आते हैं जाते हैं मगर
अन्दर-अन्दर कोई दीवार पड़ी है घर में

78

किसी भी खेत पे बरसे, कहीं का हो जाए
खुदा करे कि ये बादल ज़मीन का हो जाए

दुआ करो वो सितारा ज़मीन पे टूट गिरे
हमारे साथ रहे और यहीं का हो जाए

अजब नहीं कि जहाँ हम गुमान से निकलें
वहीं पे क़त्ल दुबारा यक़ीन का हो जाए

मैं चाहता हूँ कि अबके फलक 1 का कोई अज़ाब
मकाँ के नाम न उतरे मकीं 2 का हो जाए

मैं उसके जिस्म का सब ज़हर पी के मर जाऊँ
अगर वो साँप मिरी आस्ती का हो जाए

मिरे 'शकील' को परियों के देस मत भेजो
अजब नहीं कि ये पागल वहीं का हो जाए

-
1. आकाश
 2. निवासी

79

चाँद भी गुम है, सितारा भी नहीं है कोई
तू नहीं है तो नज़ारा भी नहीं है कोई

अब जियें किसके लिये और पियें किसके लिये
लड़खड़ाने को सहारा भी नहीं है कोई

भागते रहते हैं सैलाब के पानी की तरह
रूकना चाहें तो किनारा भी नहीं है कोई

क्या पता कौन सा रस्ता है हमारी खातिर
किस तरफ जायें इशारा भी नहीं है कोई

तुम भी इस शहर में रहते हो अकेले शायद
हम भी तनहा हैं हमारा भी नहीं है कोई

ख्वाहिशें और भी कुछ तेरे सिवा चाहती हैं
इक सिवा तेरे गवारा भी नहीं है कोई

80

कभी हूँ धूप, कभी बादलों के जैसा हूँ
मैं तेरे साथ तिरे मौसमों में रहता हूँ

मिले जो वक़्त अकेले में सुन के देख मुझे
मैं तेरे दिल में नहीं रूह में धड़कता हूँ

शबे-फिराक़! तिरी आँख के सितारों से
मैं रोज़ कितने खयालों की माँग भरता हूँ

बचा ले मुझको शबे-हिज़्र [1](#) की तबाही से
मैं तेरे जिस्म का सबसे अज़ीज [2](#) हिस्सा हूँ

अभी भी वक़्त है दामन में जज़्ब [3](#) कर ले मुझे
ज़रा सी देर में पलकों से गिरने वाला हूँ

सुनेंगे लोग मिरा दर्द अगले वक़्तों में
मैं आने वाले दिनों के खंडर का क़िस्सा हूँ

ज़रा सी पाँव की आहट भी हो तो जाग उठूँ
मैं अपनी नींद को चौखट पे रखके सोया हूँ

जो मुझको दिन के उजाले में ढूँढती हैं 'शकील'
मैं रात भर उन्हीं आँखों में बन्द रहता हूँ

[1](#) . वियोग की रात

[2](#) . प्रिय

[3](#) . समा

81

घर इतने वीरान नहीं थे
जब ये रौशनदान नहीं थे

बातें भी हम ही सुनते थे
दीवारों के कान नहीं थे

सर टकराके घर आना था
पत्थर में भगवान नहीं थे

जाने कैसी तबदीली थी
आईने हैरान नहीं थे

आँखों की इक भीड़ लगी थी
मंज़र के इमकान [1](#) नहीं थे

लुटना आखिर हमको ही था
घर थे हम दरबान नहीं थे

आँखों में बीनाई कम थी
चेहरे सब अनजान नहीं थे

[1](#). संभावना

दिल से जो जाता है, थोड़ा भी नहीं रूकता है
ईंट क्या पानी पे रोड़ा भी नहीं रूकता है

अपनी ही शक्ल में रहने पे बज़िद है लोहा
देखिये क्या हो हथोड़ा भी नहीं रूकता है

रोज़ लगता है मिरे जिस्म पे नशतर कोई
और बढ़ता हुआ फोड़ा भी नहीं रूकता है

जाने किस जुर्म की ताज़ीर मिली है मुझको
जाँ निकलती नहीं कोड़ा भी नहीं रूकता है

रास्ता है कि पुकारे ही चला जाता है
मैं भी थकता नहीं घोड़ा भी नहीं रूकता है

गर्क होता है किनारा तो सफ़ीने ही नहीं
पंछियों का कोई जोड़ा भी नहीं रूकता है

कुर्ते पर कुछ फूल कढ़ाए रहते हैं
हम भी अपना भाव बढ़ाए रहते हैं

उन आँखों ने ऐसा हमको मस्त किया
हम हरदम दो पैग चढ़ाए रहते हैं

सनक गई है वो भी हमसे मिलकर कुछ
हम भी दाढ़ी मूँछ बढ़ाए रहते हैं

प्यार का खत हर बार नया ही लगता है
शब्द भले ही पढ़े-पढ़ाए रहते हैं

इश्क़ में अब नादान नहीं होता कोई
आशिक़ सारे गढ़े-गढ़ाए रहते हैं

अन्दर इक किरदार कहीं है सोने सा
चेहरे पर हम जिसे चढ़ाए रहते हैं

पीतल में भी अस्ली-नक़ली होता है
लोहे पर कुछ लोग मढ़ाए रहते हैं

84

रात, सर्दी, खौफ, जंगल और मैं
एक लड़की, एक कम्बल और मैं

बार, होटल, फिल्म, पिकनिक, मस्तियाँ
चार दिन जंगल में मंगल और मैं

देर तक करते हैं तेरी गुफ्तगू
ऐश्ट्रे, व्हिस्की की बोतल और मैं

रूह तक जलते हुए माथे का शोर
इक हथेली नर्म कोमल और मैं

गाँव, मकतब, [1](#) बचपना, तख्ती, किताब
खेल, थप्पड़, माँ का आँचल और मैं

टूटते रहते हैं मिट्टी के लिये
फूल, खुशबू, रंग, बादल और मैं

भागती सड़कें, धुआँ, गर्दो-गुबार
ऑटो रिक्शा, चौक, ² भागल ³ और मैं

¹ . पाठशाला

² , ³ . 'सूरत' नगर के भीड़ भाड़ वाले दो चौराहे

85

कल हवा में बिखर गया था मैं
फिर न जाने किधर गया था मैं

वो था इक खत्म होते रस्ते सा
जिसपे चलकर ठहर गया था मैं

उसकी आँखों में एक दरिया था
जिसमें इक दिन उतर गया था मैं

अपनी नज़रों से गिरके उठ पाना
ऐसा करने में मर गया था मैं

उसको देखा था उससे ही छुपकर
फिर वहाँ से गुज़र गया था मैं

जब कहीं भी मुझे जगह न मिली
अपनी आँखों में भर गया था मैं

देर तक उसका इन्तेज़ार किया
फिर अकेला ही घर गया था मैं

86

कई आँखों में रहती है कई बाहें बदलती है
मुहब्बत भी सियासत की तरह राहें बदलती है

इबादत में न हो गर फायदा तो यूँ भी होता है
अक़ीदत [1](#) हर नई मन्नत [2](#) पे दरगाहें बदलती है

न इक सा आबो-दाना [3](#) है, न कोई इक ठिकाना है
मुसाफिर की थकन हर शब पनहगाहें बदलती है

हज़ारों मंज़िलें आईं मगर ठहरा नहीं हूँ मैं
अजब इक जुस्तुजू [4](#) है जो गुज़रगाहें [5](#) बदलती है

उगे हैं बस्तियों में जो वो सब जंगल हमारे हैं
हवाए- शहर भी जिस वक़्त हम चाहें बदलती है

[1](#) . आस्था
[2](#) . प्रार्थना
[3](#) . दाना-पानी

4. खोज

5. रास्ते

उम्र बिन्दास हो तो यूँ भी जिया जाता है
जुल्फ़ से काम दुपट्टे का लिया जाता है

खूब हँगामा भी हो जाँ भी सलामत रह जाय
ज़हर अब इश्क़ में इस तरह पिया जाता है

जिस सफ़र में कोई मन्ज़िल की ज़मानत ही न हो
चलके कुछ दूर उसे छोड़ दिया जाता है

बीवी-बच्चों से भरे घर में अगर जी न लगे
तो किसी और जगह फ़ोन किया जाता है

घर की पिक्चर में कई रोल अदा करती है माँ
खाना भी बनता है कपड़ा भी सिया जाता है

नज़्में

नज़्म की बुनत में बेखबरी के साथ ध्यान भी ज़रूरी है, बेखबरी क्रिएशन की ज़रूरत है और ध्यान उसे क्राफ़्ट से मिलाता है, क्रिएशन और क्राफ़्ट के मिलाप से नज़्म में खूबसूरती पैदा होती है। नज़्म शायर को एक ही बैठक में अपना पूरा रंग-रूप नहीं दिखाती, धीरे-धीरे खुलती है। बेखबरी में लिक्खी हुई कई ढली-ढलाई ग़ैरज़रूरी लाइनें अगली बैठकों में बेदर्दी के साथ काटी भी जाती हैं, और ध्यान के सहारे कई नई लाइनें जोड़ी भी जाती हैं। अच्छी नज़्म का परिचय ये है कि वह भूमिका बनाती हुई शुरू होकर बीच में अपनी कल्पना के कैनवास भर फैले और आखिरी दो-चार पंक्तियों में खयाल का पूरा निचोड़ लिए किसी रहस्यमय फ़लसफ़े या किसी खुले हुए सन्देश में ढलकर एक ड्रामाई अन्दाज़ के साथ छत से लटकते काँच के झूमर की तरह पाठक के दिलो-दिमाग़ के फ़र्श पर छनाके से गिरे और टूट कर दूर तक बिखर जाए।

—शकील आज़मी

दूसरे दर्जे की पिछली क़तार का आदमी

गोश्त
मछली
सब्ज़ियाँ
बनिये का राशन
दूध-घी
मुझको खाती हैं ये चीज़ें
मैनें कब खाया इन्हें
मेरा घर रहता है मुझमें
घर में मैं रहता नहीं
बीवी बच्चों के फटे कपड़ों में मैं हूँ
और नए जोड़ों की खुशियों में
छुपा जो कर्ब [1](#) है
वो भी हूँ मैं
फ़ीस में स्कूल की
कापी-किताबों में भी मैं
मैं ही हूँ चूल्हे की गैस
मैं ही हूँ स्टोव का तेल
मेरे जूते जोंक की मानिन्द
मेरे पाँव से लिपटे हुए हैं
चूसते हैं मेरा खून

मेरा स्कूटर
मिरे कांधों पे बैठा है
मैं उसके टायरों में घूमता हूँ
और घिसता हूँ

[1](#) . पीड़ा

मौरूसी 1 मकान

जाने कब से भीग रहा हूँ याद नहीं
बारिश और बदन के बीच अँधेरा है
आँखें बन्द पड़ी हैं फिर भी
अन्दाज़े से देख रहा हूँ
दूर बहुत इक मिट्टी का घर
जैसे अब गिरने वाला है
अच्छा है कि दरवाज़ों पर ताला है
गलियाँ सब वीरान पड़ी हैं
बाहर खेलने वाले बच्चे अपने-अपने घर दुबके हैं
गाय-भैंस अपनी नांदों में
बेफिक्री से मुँह लटकाए
मस्ती से पघुरी 2 करती हैं
लेकिन बैठक में इक कोने
लंगड़ी कुतिया ऊँघ रही है
उसकी हालत
घर की हालत
बिल्कुल ही इक जैसी है
घर गिर जाए तो मैं अपनी आँखें खोलूँ
अपने-आप को मल्बे से बाहर ले आऊँ
जश्न मनाऊँ लंगड़ी कुतिया के मरने का

-
1. पैत्तिक
 2. जुगाली

मौरूसी मकान - 2

वो घर!

अजदाद ¹ का वो घर

कि जिसमें मैं न रहता था

मगर बरसात के मौसम में वो मुझपर टपकता था

हवाए-तुन्द ² जब दीवार या खपरैल से लड़ती

बदन छिल जाता था मेरा

अजब कुर्बत थी उस मिट्टी से इस मिट्टी की दूरी में

वो घर अब बिक चुका है

मैंने ही बेचा भी है उसको

कि शायद इस तरह राहत मिले मुझको

अब आने वाली बरसातें मिरी मिट्टी पे ना बरसें

कोई आँधी मिरे अहसास की दीवार न ढाये

मगर ऐसा न हो पाया

मिरे अजदाद मुझमें जी उठे हैं

मैं उस घर के दरो-दीवार के नीचे

बहुत नीचे

कहीं ज़ख्मीं पड़ा हूँ

¹. पूर्वज

2 . तेज़ हवा

सफ़ेद पंछी

(अपने बूढ़े और बीमार बाप के लिए एक दुआ)

खुदाए-बर्तर!

फ़सीले-जाँ के सभी पलस्तर उखड़ चुके हैं

तमाम ईंटें दिखाई देने लगी हैं अब तो

कहीं-कहीं से तमाम गारे भी बह चुके हैं

वो इस लिए कि कई बरस से न धूप निकली न चाँद निकला

न कोई तारा ही झिलमिलाया

यहाँ तलक कि हवा के हाथों में इक दिया जो बुझा-बुझा था

कि जिसमें पिन्हाँ थी लव उमीदों की

गिरके दस्ते-हवा से सैले-रवाँ की लहरों में खो चुका है

सफ़ेद पंछी भी उड़ चुके हैं

यही है सबब है फ़सीले-जाँ की तमाम सिम्टें कई बरस से हैं

तीरगी में

खुदाए-बर्तर!

बड़ों को कहते सुना है मैंने

कि तू अँधेरे उजाल देता है

तू अज़ाबों को टाल देता है

गर ये सच है तो एक ऐसी सहर अता कर

कि जिसके दिल में सफ़ेद बादल का ग़म नहीं हो

कि जिसकी आँखों में काले बादल का डर नहीं हो

कि जिसके सर पर खुला हुआ इक गगन हो नीला
जहाँ से सूरज की तेज़ किरनें ज़मीं पे उतरें
तमाम सैले-रवाँ को पी लें
तमाम गीली ज़मीं सुखा दें
फसीले-जाँ से सफ़ेद पंछी जो उड़ गए थे अँधेरा कर के
चरागा जलते ही लौट आएँ

मेरा बाप

खुली फ़ज़ा 1 में साफ हवा के जैसा वो
बारिश के पानी के जैसा उजला वो
गहरा था मिट्टी से रिश्ता पैरों का
इस रिश्ते के बीच न आई चप्पल भी
घड़ी न बाँधी कभी कलाई पर उसने
सूरज तारे वक्रत उसे बतलाते थे
अपने बल पर अपनी धुन में रहता था
नहीं किसी से गाँव में वो डरता था
वो दाना था
वो मिट्टी था
वो पौधा था
वो मौसम था
वो तनहा था
एक बड़े से घर में तनहा रहता था
भैंसों उसकी साथी थीं
उसकी बात समझती थीं
वो भी उनकी ही भाषा में
उनसे बातें करता था
घर पर अक्सर लगा के ताला यूँही सा
खलियानों में रहने वाला बाप मिरा

खेतों-खेतों बसने वाला बाप मिरा
आम की छाँव में सोने वाला बाप मिरा
अब मिट्टी में सोता है
आम के पेड़ की ख़ुश्क जड़ों में रोता है

चट्टान पर उगा हुआ पेड़

मैं ऐसा बीज, जो खुद अपने ही लहू में सड़ा
किसी ने बोया नहीं मुझको अपनी मिट्टी में
ज़मीन पर नहीं चट्टान पर उगा हूँ मैं
न बादलों ने मिरे लब भिगोए बारिश में
न सर्दियों से मिरी धूप ने हिफ़ाज़त की
गिराने आई कई बार आँधियाँ मुझको
मिरे खिलाफ़ बहुत मौसमों ने साज़िश की
मगर खड़ा ही रहा मैं उखड़ते पैरों से
कुछी दिनों में मिरे रंग-रूप यूँ बदले
चटान मुझमें मैं चट्टान में उतरता गया
अब आसमाँ मिरी शाखों को छूना चाहता है
ज़मीन मेरे तने से लिपटना चाहती है
मगर मैं खुद को चटानों पे तोड़ देता हूँ
सुकून मिलता है जड़ों को रायगाँ ¹ करके
ज़मीन! तुझसे यही इन्तेक़ाम है मेरा

¹. व्यर्थ

पहचान

मेरे अपनो!

हमारी कई पुश्तों [1](#) ने

फावड़े, बैल और हल के अत्‍राफ़ [2](#) ही

घूम कर तन छुपाए

मगर पेट की आग बुझ ना सकी

और खुद वो ज़मीं की गिज़ा [3](#) बन गए

जिनके नामों की अब तख्तियाँ भी

जो ढूँढो तो मिलती नहीं

जिनकी क़ब्रों के नामो-निशाँ मिट चुके

और जिन्हें अब कोई जानता तक नहीं

तुम ज़मीनों के मौसम में खोये रहे

और कुएँ से निकलने की कोशिश न की

तुमने लफ़्ज़ों पे भैंसों को तरजीह [4](#) दी

और पागल कहा तुमने मुझको

कि मैं सोचता हूँ बहुत

ये क़लम जो मिरी ज़िन्दगी है

जिसे तुम मिरे हाथ से

छीनने आए हो

छीन लो

खत्म कर दो मुझे

इससे पहले मगर सोच लो
मैं तुम्हारे सभी
ज़िन्दा और मुर्दा लोगों की पहचान हूँ

-
- 1 . पीढ़ियों
 - 2 . चारों ओर
 - 3 . भोजन
 - 4 . प्रधानता

अपना शोला अपनी राख

मैं कि फ़नकार हूँ उजालों का
और अँधेरो में कैद रहता हूँ
मैं कि तखलीक़कार [1](#) हूँ लेकिन
भूक और प्यास मेरी किस्मत है
एक उँगली कई सवाल लिए
मुझमें नेज़े [2](#) की तरह चुभती है
और मैं ज़ख़्म-ज़ख़्म काँधों पर
ज़िन्दगी को उठाए फिरता हूँ
वक़्त रस्ते में रोक कर मुझको
रोज़ो-शब का हिसाब माँगता है
ज़िन्दा रहते हैं फिर भी अहसासात
आगही [3](#) के दिये नहीं बुझते
हर नई रात मौत का पैग़म
हर नया दिन है ज़िंदगीनामा
रोज़ जीता हूँ रोज़ मरता हूँ
रोज़ जलता हूँ रोज़ बुझता हूँ
कोई दिन यूँ बुझूँ कि जल न सक्ूँ
कोई दिन यूँ मरूँ कि जी न सक्ूँ

-
1. रचनाकार
 2. भाला
 3. इल्म/खबर/पूर्वाभास

फ़रार

मैं कि बचपन में एक दिन घर से
ऐसा भागा कि भागता ही रहा
शहर-दर-शहर बेघरी का अज़ाब
आसमाँ मेरे नाम लिखता रहा
मेरी ख़ानाबदोशियाँ मुझसे
कह रही हैं कि ठहर जाऊँ कहीं
और कुछ थक चुका हूँ अब मैं भी
चाहता हूँ कि एक शब के लिए
ठहर कर रास्ते में दम ले लूँ
इससे पहले कि खेसा ¹ नस्ब ² करूँ
चन्द साए मिरे तआकुब ³ में
दूर ही से दिखाई देते हैं
और फिर भारी-भारी क़दमों की
चाप कानों में पड़ने लगती है
फ़ास्ला भी सिमटने लगता है
और मैं फिर से पागलों की तरह
एक जानिब को दौड़ पड़ता हूँ
और फिर सब डरावने साए
धुन्द के पीछे डूब जाते हैं
मैं कि इस बार भी सदा की तरह

इनके चँगुल से बच निकलता हूँ
बच निकलना भी इक अज़ाब सा है
सिलसिला ख़त्म क्यों नहीं होता
एक जाए-अमान ⁴ की ख़ातिर
कब तलक भागता रहूँगा मैं

-
- ¹ . तम्बू
 - ² . गाड़ना
 - ³ . पीछा करना
 - ⁴ . सुरक्षित स्थान

बिखराव

बिस्तर दिन भर यूँही बिखरा रहता है
रात को काफ़ी देर से सोने आता हूँ
सूरज जब आँखों में आकर गिरता है
डोल में भरकर दूर से पानी लाता हूँ
टूथ पेस्ट और ब्रश कहीं पर होते हैं
साबुनदानी ताक़ पे रक्खी मिलती है
लेकिन साबुन अक्सर ग़ायब होता है
बाथरूम भी चलता-फिरता रहता है
छालों ने पैरों से कल भी पूछा था
ये सब चीज़ें एक जगह कब आएँगी

बिस्तर की नज़्म

पीले तन पर मैल लपेटे
धूल भरे बिखरे बालों में
नंगी और ज़ख्मी टाँगों से
शहर में इक पागल फिरता है
आते जाते हर मन्ज़र को
खाली आँखों से तकता है
रात को उसके गन्दे कपड़े
मेरा जिस्म पहन लेते हैं
और मुझे नींद आ जाती है

बड़े शहरों के मज़दूर

ज़िन्दा रहने की ख्वाहिश में
दिन का बोझ उठाने वाले
रातों को जब थक जाते हैं
दारू से रोटी खाते हैं
और सड़क पर सो जाते हैं
सूरज जब मिलने आता है
जेबें सब खाली होती हैं

मुंबई में वक़्त

किसको इतनी फ़ुर्सत है जो तुम्हें जगाए
चाय पिलाए, बात करे, बाहर ले जाए
लोकन ट्रेनें लम्हा भर ही रूकती हैं
सूरज भी बीड़ी सुलगाकर चल देता है

मुंबई की बारिश

मैं जब फुटपाथ पर सोता था तो बारिश से डरता था
मिरी वो खाट जो मुझको कई फाकों के बदले में मिली थी
वो इक छप्पर तले आधी से ज़्यादा भीग जाती थी
कहाँ फिर नींद आती थी
उसी बारिश ने मेरी सब पसन्दीदा किताबों को
हवाले कर दिया था दीमकों के
मिरे अल्बम की तस्वीरों में जितने रंग थे सब धो दिए थे
बहुत कुछ मुंबई की बारिशों में खोया है मैंने
खुदा लेकिन हुआ जब मेहरबाँ तो
बड़ा सा घर मिला मुझको
अब अपने घर की खिड़की से मैं काले बादलों का पीछा
करता हूँ
कहाँ से कितना पानी लाते हैं
कैसे बरस्ते हैं
सभी कुछ देखा करता हूँ
भला लगता है मुझको बारिशों के मन्ज़रों को देखते रहना
यही बरसात जो पहले बहुत मुझको डराती थी
मिरे बिस्तर में मेरे साथ गहरी नींद सोती है
गरज कर बारहा जो मुझपे गिरती थी वही बिजली
मिरे कमरे के नाइटबल्ब में हलके से जलती है

दुशाला बादलों का ओढ़कर ख़्वाबों में चलती है

रास्ता बुलाता है

रंग बुझने लगे हैं आँखों में
बिल्डिंगें जुगनुओं सी लगती हैं
चाँद तारे कहाँ हैं क्या मालूम
लड़कियाँ अधखुले बदन वाली
इक ज़रा पास से गुज़रती हुई
जो मिरा दर्द बाँट लेती हैं
सो चुकी होगी अपनी क़ब्रों में
अब कहीं ज़िन्दगी का नाम नहीं
भूक ने पाँव बाँध रखे हैं
फिर भी चलने पे हूँ बज़िद कि अभी
चन्द लार्शें हैं हसरतों की जिन्हें
सुब्ह से पहले दफ़्न करना है
बोझ कुछ कम हो तो कहीं बैठूँ
और फिर बैठे-बैठे सो जाऊँ
फिर कोई ख़्वाब देखूँ कल के लिए
अभी इक रोज़ और जीना है

वो

वो!

अपनी झोपड़पट्टी से
शाम ढले बाहर आता है
लम्बे-चौड़े बँगलों वाली
इक बस्ती में घुस जाता है
साफ़ कुशादा ¹ गलियों में
यूँही घूमता-फिरता है
मज़ेदार खानों की खुशबू सूँघता है
खिड़की और दरवाज़ों से
घरों के अन्दर झाँकता है
आँखों से चेहरे चुनता है
आते-जाते जिस्मों का
नज़रों से पीछा करता है
हरे-भरे जिस्मों के लम्सल ²
मज़ेदार खानों की खुशबू
ज़ेहन में लेकर
वापस खोली पर आता है
रोज़ का खाना नए जायक़े से खाता है
इसके कूल्हे
उसकी टाँगें

इसका चेहरा
उसके बाल
इक काली-पीली औरत में
नत्थी करके सो जाता है

-
- [1](#) . खुला हुआ
 - [2](#) . स्पर्श

पीने के बाद

शाम ढली तो बीयर बार में दिन निकला
व्हिस्की के दो पैग में सारे ग़म डूबे
अदब, [1](#) सियासत, मज़हब से तारीख़ [2](#) तलक
हर मौजूअ [3](#) पे थोड़ी-थोड़ी बात चली
हिन्दू, मुस्लिम, मन्दिर, मस्जिद को लेकर
कई सियासी लीडर पर तलवार चली
हिन्दो-पाक के बटवारे पर
क्रायदे-आज़म [4](#) और बापू से नफरत का इज़हार हुआ
सारे अच्छे उदबा [5](#) शोअरा [6](#)
हदफ़ [7](#) बने अपनी गाली के
'अल्लामा इक़बाल' को जोड़ा 'अडवानी' से
'मीरो'- 'ग़लिब' खाक हुए
फारूक़ी, नारंग, वारिस [8](#) की तनक़ीदों [9](#) में क्या रक्खा है
अलवी और निदा [10](#) से हम अच्छा लिखते हैं
होश आया तो सभी किताबें
कमरे के अन्दर बिखरी थीं
हमने सबको बारी-बारी चुनकर चूमा गले लगाया
और सलीक़े से ले जाकर मेज़ पे रक्खा
सुब्ह का सूरज इल्म की किरनें ले आया
आँखों में फिर पाकी [11](#) आई

रात गई और बात गई

-
- [1 . साहित्य](#)
 - [2 . इतिहास](#)
 - [3 . विषय](#)
 - [4 . जिनाह](#)
 - [5 . साहित्यकार](#)
 - [6 . शायर का बहुवचन](#)
 - [7 . निशाना](#)
 - [8 . समकालीन आलोचक](#)
 - [9 . आलोचनाओं](#)
 - [10 . मुहम्मद अलवी व निदा फाजली](#)
 - [11 . पवित्रता](#)

जंगल का आदमी

आकाश रहा छप्पर मेरा
ये धरती थी बिस्तर मेरा
सूरज को खुदा बनाया था
इक नूर उसी से पाया था
पत्थर से आग जलाई थी
लकड़ी से नाव बनाई थी
सर पर दो सींग सँवारे थे
तीरों से दरिन्दे मारे थे
पोशाक बुनी थी पत्तों से
रिश्ता था अजब दरख्तों से
फल सारे मिरी गिज़ाएँ ¹ थे
गुल बूटे मिरी दवाएँ थे
गर्मी से तन को ढाँपा था
सर्दी को जलाकर तापा था
बादल बरसे तो भीग गया
जब धूप खिली तो सूख गया
मैं छतरी के बिन चलता था
मौसम के साथ बदलता था
जब मैं जंगल में रहता था

1. खुराक

बीसवीं सदी की क़ब्र पर

सौ-सौ बच्चे पैदा करने वाली माँ!
तू कितनी तनहा लगती थी
घर के इक कोने में फेंकी रहती थी
बोझ था कितना तेरे हड्डी की ढाँचों पर
तेरे लोग ही तेरी भाषा से अनजान
तेरा पहनावा उनके कपड़ों से अलग
मैं तेरे दुख समझ रहा हूँ
हमजोली हूँ तेरे उन्तीस बेटों ¹ का
तू घर-आँगन खेतों और खलियानों वाली भोली औरत
पनघट पर बलखाने वाली चनचल लड़की
घूँघट में शरमाने वाली प्यारी दुल्हन
रात-रात भर जागने वाली अच्छी माँ
तेरे बेटे ऐटम बम से खेल रहे हैं
पाँव तले बारूद बिछा कर नाच रहे हैं
सबको नफरत बाँट रहे हैं
कितना फर्क है तुझमे और तेरे बेटों में
मुझको डर है तेरे बेटे
दुनिया जीतने के चक्कर में
दुनिया ही को खत्म न कर दें
अच्छा हुआ जो तू मर गई

अपनों के मरने से पहले
दुनिया के मिटने से पहले
मैं तेरे मरने से खुश हूँ

[1](#). शायर की आयु तब 29 वर्ष थी

इक्कीस्वीं सदी की पैदाइश पर

जानता हूँ
सौ साल मिला जीवन तुझको
सेहत भी तेरी अच्छी है
लेकिन फिर भी
मुझको तेरी लम्बी उम्र पे शुब्हा है
ऐसी दुनिया
जहाँ गुनाहों के सैलाब हैं चारों सिम्त
महँगाई हर शय पर साँप बनी बैठी है
आदमी-आदमी का दुश्मन है
भाषा, मज़हब, रंग, नस्ल के झगड़े हर जानिब फैले हैं
मुल्क-मुल्क में खानजंगी
सरहद-सरहद जंगों की तय्यारी है
गाहे-गाहे आस्मान से अज़ाब उतरते रहते हैं
घर-घर बीमारी फैली है
ऐसे में तेरी सेहत भी कब तक अच्छी रह सकती है
रोग लगेंगे तुझको भी
तू भी हम लोगों की तरह
वक़्त से पहले मर जाएगी

पर्दे के पीछे का अँधेरा

ये फ़िल्मी दुनिया
है ऐसी दुनिया
जहाँ हमेशा से ऐक्टरों की है हुक्मरानी
बग़ैर इनके न कुछ है मन्ज़र
न कुछ कहानी
सड़क से बाज़ार और घर तक
हर एक जानिब ये दिख रहे हैं
यही करोड़ों में बिक रहे हैं
हज़ारों फ़नकार अपने फ़न से
जो इनकी फ़िल्में सजा रहे हैं
कहीं वो गायब हैं
लापता हैं
न जाने किसकी वो बद्दुआ हैं
करोड़ों मज़दूर अपने काँधों पे
लाइटों का पहाड़ उठाए
कई ज़मानों से चल रहे हैं
बहुत अँधेरा है उनके घर में
जो पीछे पर्दे के जल रहे हैं
इसी जहाँ में है इक क़लम भी
कि जिससे निकला था एक गब्बर ¹

कि जिसने लिखा था इक मुगेम्बो ²
कि जिसने सोचा था एक बिरजू ³
कि जिसने पर्दे पे इक विजय ⁴ की तलाश की थी
इसी क़लम ने विलन को मारा
बदी पे नेकी की जीत लिखी
रिवाज नफ़रत का काट डाला
नई मुहब्बत की रीत लिखी
क़लम ने ऐक्टर को जान दी है
खमोशियों को ज़बान दी है
क़लम ने लिखे हैं गीत ऐसे
कमाती फ़िल्में हैं जिनसे पैसे
मगर क़लम की नहीं है कीमत
मगर क़लम की नहीं है इज़ज़त
मिलेगा कब इस क़लम को चेहरा
वो दौर आएगा कब सुनहरा
मैं पीछे पर्दे के सोचता हूँ
ये खेल बरसों से देखता हूँ

-
- ¹ . अमजद ख़ान (शोले)
 - ² . अमरीशपुरी (मिस्टर इंडिया)
 - ³ . सुनील दत्त (मदर इंडिया)
 - ⁴ . अमिताभ बच्चन (अनेक फ़िल्में)

हीरोइन

तलाश करता था उसको ही लाइटों का नगर
उसी के चेहरे पे खुलती थी कैमरे की नज़र
तमाम जिस्म अदाकारी से लहकता था
उसी की खुशबू से स्टूडियो महकता था
वो इक सितारा करोड़ों दिलों की धड़कन थी
हसीन इतनी कि वो खुद ही अपना दर्पन थी
सिंगार जितने थे सारे उसी के होते थे
लिबास उसके बदन से उतरके रोते थे
अदाएँ ऐसी कि पर्दे पे हुन बरस्ता था
ज़माना एक झलक के लिए तरस्ता था
वो जब तलक न जगे दिन नहीं निकलता था
हरेक सुब्ह का सूरज उसी से जलता था
सितारे सोते न थे उसके नींद आने तक
वो फ़िल्मी दुनिया पे छाई रही ज़माने तक
मगर ये उम्र ठहरती नहीं जवानी की
कहानी मोड़ बदलती है ज़िन्देगानी की
हर इक चढ़ान के रस्ते में इक ढलान भी है
जहाँ खुशी है वहीं ग़म की दास्तान भी है
ये ग़म, वो चीज़ है जो बाँटने से बटती नहीं
ग़मों की रात कभी काटने से कटती नहीं

बहुत से ग़म थे मगर कोई ग़मशनास न था
वो जब मरी तो कोई उसके आस-पास न था

एक सिंगर लड़की की डायरी

आज की सुबह में मस्ती सी थी
आज मैं देर तक सोई रही
खुल गई आँख मगर बिस्तर पर
यूँही बेनाम खयालों में कहीं खोई रही
आज अंगड़ाई से भी जिस्म की आलस न गई
ठन्डा-ठन्डा सा रहा शौक भी मौसीकी का
प्यानी खोला तो बजाने की तबीअत न हुई
तानपूरे पे कोई सुर न लगा अच्छे से
हॉल में आके ज़रा देर यूँही बैठ गई
आँख ठहरी नहीं टीवी के किसी चैनल पर
खिड़कियाँ खोलके बाहर की तरफ भी देखा
कोई मन्ज़र न हमाहंग हुआ नज़रों से
घर की हर चीज़ करीने से सजी थी लेकिन
मैंने हर चीज़ की तरतीब बदलकर देखी
सब जतन कर लिए माहौल न बदला दिल का
बेवजह आज भरे घर में कमी सी कुछ थी
बेवजह आँख के गोशों में नमी सी कुछ था
जाने क्या सोचके फिर खोलके अलमारी से
एक इक करके निकाले सभी तोहफे तेरे
एक इक तोहफे से वाबस्ता थीं यादें तेरी

ऐसी यादें जो कई साल तलक फैली थीं
मेरे माज़ी से मिरे हाल तलक फैली थीं
फिर से इक बार उसी तरह जिया मैंने तुझे
फिर से इक बार बहुत प्यार किया मैंने तुझे

फ़ोटोजनिक चेहरे

बहुत फ़ोटोजनिक थे हम
चुना था हमने तस्वीरों से ही इक दूसरे को
मगर जब हम मिले तो
न वो मैं था
न वो तुम थे
हम अपनी-अपनी हैरानी में गुम थे
जो हम इक दूसरे में ढूँढते हैं
वो लाइट का करिश्मा था
सफ़ाई कैमरे की थी
अगर हम इस हकीक़त को समझ जाएँ
तो शायद पा सकें इक दूसरे को
बहुत मुम्किन है कुछ दिन साथ रहकर
हमारे चेहरे वैसे ही चमक जाएँ
मुहब्बत में हज़ारों रौशनी के रंग होते हैं
मुहब्बत करने वाले ज़िन्दगी के संग होते हैं

झूठी मुहब्बत

तुम्हारा मैं हूँ
मिरे तुम हो
अच्छे जुमले हैं
मगर ये बात बहुत दूर है हकीकत से
कहीं से तुम हो अधूरे
कहीं से खाली मैं
तुम अपनी तरह मुझे इस्तेमाल करते हो
मैं अपनी तरह तुम्हें इस्तेमाल करता हूँ
ये ज़िन्दगी है
यहाँ घात में है हर कोई
सब अपनी-अपनी ज़रूरत में छुपके बैठे हैं
कहीं नहीं है मुहब्बत
फ़रेब है सब कुछ
मगर ये झूठी मुहब्बत बहुत ज़रूरी है
लहू में जैसे हरारत बहुत ज़रूरी है

खिजाँ 1 का मौसम रुका हुआ है

गई हो जबसे
मैं एक कमरे में बन्द सा हूँ
तुम्हारी यादें
मिरे खयालों में
जुगनुओं की क़तार बनकर चमक रही हैं
तुम्हारी जुल्फ़ें
मिरे तसव्वुर की वादियों में महक रही हैं
वो बाल!
चाहत की साज़तों 2 में
तुम्हारे सर से जो गिर गए थे
उन्हें मैं चुनकर
बड़ी मुहब्बत से सूँघता हूँ
तुम्हारे कुरते से टूटकर जो
सफ़ेद मोती बिखर गए थे
उन्हें मैं चुनकर
बड़ी अक़ीदत 3 से चूमता हूँ
वो मेरा कमरा!
तुम्हारे आने से
जो चमन में बदल गया था
हज़ारों रंगों के फूल खिलने लगे थे जिसमें

तुम्हारे जाने से
फिर से वीरान हो गया है
वो दिल!
जो धड़का था तुमसे मिलके
वो फिर से बेजान हो गया है
न अब किताबों में शायरी है
न अब शराबों में बेखुदी ⁴ है
न अब गुलाबों में ताज़गी है
तमाम गमले, तमाम पौदे
मिरी तरह से उजड़ चुके हैं
हर एक शै पर खिजाँ का मौसम रूका हुआ है
मिरे लबों पे
तुम्हारे बोसों की जो नमी थी
वो खुश्क होने लगी है जानाँ
मिरी नज़र में
तुम्हारी आँखों का जो नशा था
वो खत्म होने लगा है जानाँ
मिरी ज़बाँ पे
तुम्हारे अशकों का जो नमक था
वो पानियों में बदल रहा है
तुम्हारी बाँहों का
मेरी बाँहों में
लम्स ⁵ था जो
वो सर्दियों में बदल रहा है
तुम आ भी जाओ
कि दिल को फिर से क्ररार आए
सुरूर आए, खुमार आए
कि ज़िंदगी में बहार आए

-
1. पतझड़
 2. लम्हों
 3. श्रद्धा
 4. नशा
 5. स्पर्श

रौशनी का सफ़र

शाम का हलका सा धुंदलका है
एक लड़की ब्लैक स्कर्ट में
अपनी मस्ती में चलती जाती है
पिंडलियों में चराग़ जलते हैं
एक लड़का इसी उजाले में
अपनी मन्ज़िल के ख़्वाब देखता है

नई आस्तीन

न मेरे ज़हर में तलखी [1](#) रही वो पहली सी
बदन में उसके भी पहला सा ज़ायका न रहा
हमारे बीच जो रिश्ते थे सब तमाम हुए
बस एक रस्म बची है शिकस्ता [2](#) पुल की तरह
कभी-कभार जो अब भी हमें मिलाती है
मगर ये रस्म भी इक रोज़ टूट जायेगी
अब उसका जिस्म नये साँप की तलाश में है
मिरी हवस [3](#) भी नई आस्तीन ढूँढती है

[1](#) . कड़वाहट

[2](#) . टूटे

[3](#) . वासना

सेल्सगर्ल

एक बड़ा सा मार्केट है
मार्केट में एक दुकाँ है
जिस पर मैं बैठा रहता हूँ
सामने ही इक और दुकाँ है
जिसमें फूल से चेहरे वाली
इक लड़की रोज़ आती है
काउन्टर से लग जाती है
उसके तन पर रोज़ नई साड़ी होती है
कान के बाले
हाथ के कंगन
घड़ी के पट्टे
और सैन्डल
साड़ी ही के रंग से मिलते होते हैं
कभी-कभी मैं सोचता हूँ कि उससे पूछूँ
छोटी सी तन्ख्वाह में कैसे
इतना सब कुछ होता होगा
फिर ये सोच के रुक जाता हूँ
पूछूँगा तो ठेस लगेगी
खुशियाँ नाज़ुक होती हैं
मर जाएँगी

कभी तुमने कहा था

मैं अगर तुमसे खफ़ा हो जाऊँ
तुम मना लेना मुझे
रूठने और मनाने में मुहब्बत है बड़ी
कच्चे धागों की तरह होता है दिल का रिश्ता
देखो टूटे न ये चाहत की लड़ी
तुम मना लेना मुझे
कम लगूँ मैं जो कहीं से तुमको
तुम मिरे कम को मुकम्मल करना
धूप को छाँव मिरी प्यास को बादल करना
तुम कभी मेरे लिए चाँद-सितारा लेने
दूर मत जाना कहीं
क्योंकि तुममें ही मिरा चाँद भी तारा भी है
आसमाँ तुम हो मिरे
मुझको बाज़ार के गहनों की जरूरत क्या है
मेरे चाँदी मिरे सोना हो तुम
मेरी आँखों के लिए ख़्वाब सलोना हो तुम
तुम भरोसा हो मिरा
तुम भरोसा हो मिरा अपनी हिफ़ाज़त करना
कुछ भी हो जाए मगर मुझसे मुहब्बत करना
ज़िन्दगी किसकी समझ में आई

हाँ मगर जितनी समझ में आए
तुम मुझे उतनी बताते रहना
वक़्त गर राह बदल दे तो भी
अपने हमराह चलाते रहना
मेरी आँखों में दिये अपने जलाते रहना
साथिया साथ निभाते रहना

बेवफ़ा मुहब्बत

मैंने जो फूल सजाया था तेरी जुल्फों में
उसकी खुशबू से कोई और महकता होगा
मैंने जो चाँद उगाया था तेरे माथे पर
उसके साये में कोई और चमकता होगा
जिनपे लिखा था मिरा नाम उन्हीं होटों पर
अब किसी और की उलफ़त के तराने होंगे
जिनमें रहते थे मिरे ख़्वाब उन्हीं आँखों में
अब किसी और की चाहत के फ़साने होंगे
तेरा चेहरा जो खिला करता था मेरी खातिर
अब किसी और की नज़रों का नज़ारा होगा
जिस्म तेरा मिरी बाँहों में जो मचला था कभी
अब किसी और की बाँहों का सहारा होगा
तुझको मालूम हुआ बाद में मजबूर थी तू
साथ देने को किसी और का मजबूर थी तू
इससे अच्छा था कि हम दोनों कहीं खो जाते
ज़हर पी लेते हमेशा के लिए सो जाते
मैं तो मारा गया दुनिया से बग़वत करके
तुझसे ये भी नहीं हो पाया मुहब्बत करके
ग़ैर की होके हया भी नहीं आई तुझको
सच तो ये है कि वफ़ा ही नहीं आई तुझको

खयालो का जहाँ

जो तुम मिलो तो बताऊँ तुमको
कि नींद आँखों से खो गई है
मिरे तड़पते मचलते दिल को
तुम्हारी आदत सी हो गई है

जो तुम सुनो तो सुनाऊँ तुमको
ये शोर सा है जो दिलके अन्दर
तुम्हारी उल्फत में खूने-दिल से
ग़ज़ल जो लिक्खी है मैंने तुमपर
क़रीब आओ तो गुनगुनाऊँ

मैं तुमको अपनी ग़ज़ल सुनाऊँ
जो तुम कहो तो दिखाऊँ तुमको
जो ख़्वाब पलकों के दरमियाँ हैं
ज़मीं के दामन से आसमाँ तक
तुम्हारी चाहत की दास्ताँ हैं
कहीं पे ज़ाहिर कहीं पे गुम हो
मिरे खयालों में तुम ही तुम हो

बुखार

मैं डॉक्टर भी हूँ अपना मरीज़ भी मैं ही
बुखार तेज़ है और वो भी रात का है समय
न बाज़ू वाले मकानों में टीवी चलता है
न रोड पर कोई आवाज़ ही उभरती है
न आस-पास पुलिस चौकी के पुलिसवाले
हैं खाली-खाली से फुटपाथ लारियाँ भी नहीं
किसे तलाश करूँ और सदाएँ दूँ किसको
यहाँ पे कोई नहीं एक मैले जग के सिवा
पुरानी लुंगी के टुकड़े हैं बासी पानी में
मैं अपने हाथों से अपने दहकते माथे की
पलंग पे लेटा हुआ पट्टियाँ बदलता हूँ

बेज़बान मुहब्बत

मैं कर रहा हूँ तिरा इन्तिज़ार बरसों से
तिरे लिए है मिरे दिल में प्यार बरसों से
तुझे भी प्यार है मुझसे ये जानता हूँ मैं
तिरा क़रार है मुझसे ये जानता हूँ मैं
मगर तू प्यार का इज़हार क्यों नहीं करती
मिरी तरह कभी इक़रार क्यों नहीं करती
मैं सोचता हूँ तुझे बारहा तख़य्युल में
मैं देखता हूँ तुझे बारहा तसव्वुर में
तू मुझसे मिलने पे करती है खुद को आमादा
मगर हैं दिल में तिरे उलझनें बहुत ज़्यादा
तू फिर भी खुद में बड़ी हिम्मतें जुटाती है
फिर आइने में खड़ी होके मुस्कुराती है
धड़कते दिल से मुहब्बत के वादे करती हुई
तू अपने-आप में क्या क्या इरादे करती हुई
बहाना करके कोई घर से तू निकलती है
मिरा खयाल लिये मेरी सिम्त चलती है
ये सोचती है कि तू आज मुझसे मिल लेगी
जो दिल में है उसे अपनी ज़बाँ से कह देगी
मगर ज़बान तिरा साथ दे नहीं पाती
तू अपना हाथ मिरे हाथ दे नहीं पाती

तू कपकपाते लबों में बिखर सी जाती है
मिरे करीब से होके गुज़र सी जाती है

ख़्वाब भटकते हैं

मैं दिल दयार की पगडण्डियों पे चलता रहा
इक ऐसे ख़्वाब की ताबीर ¹ ढूँढने के लिए
वो ख़्वाब, जिसका बदन मौज है रवानी है
वो ख़्वाब, जिसका बदन हुस्न है जवानी है
वो ख़्वाब, जिसका तबस्सुम ² है अधखिले गुनचे ³
वो ख़्वाब, जिसके तरन्नुम ⁴ में बहते हैं झरने
वो ख़्वाब, होंट हैं जिसके भरे-भरे बादल
वो ख़्वाब, जुल्फ़ है जिसकी उड़े-उड़े आँचल
वो ख़्वाब, सात समुन्दर हैं जिसकी आँखों में
वो ख़्वाब, ज़ख़्म के मरहम हैं जिसकी बातों में
वो ख़्वाब, जिसकी सदाएँ हैं खुशबुओं जैसी
वो ख़्वाब, जिसकी निगाहें हैं जुगनुओं जैसी
वो ख़्वाब, ऐसा नूरानी ⁵ कि जैसे सुब्ह कोई
वो ख़्वाब, सांवला ऐसा कि जैसे शाम कोई
वो ख़्वाब, जिसके तसव्वुर से प्यार है मुझको
वो ख़्वाब, जिसका तखय्युल ⁶ करार ⁷ है मुझको
मैं दिल दयार की पगडण्डियों पे चलता रहा
क़दम-क़दम पे चरागों की तर्ह जलता रहा
मगर मिला न कोई मेरे ख़्वाब के जैसा
मैं दिल दयार की पगडण्डियों पे चलता रहा

-
- [1](#). स्वप्न फल
 - [2](#). मुस्कान
 - [3](#). कलियाँ
 - [4](#). सस्वर
 - [5](#). आलोकित
 - [6](#). कल्पना
 - [7](#). चैन

चुनिंदा अशआर

हर घड़ी चश्मे-खरीदार में रहने के लिए
कुछ हुनर चाहिए बाज़ार में रहने के लिए



कहीं कोई है जो नब्बे-दुनिया चला रहा है वही खुदा है
जो हो के गायब कमाल अपने दिखा रहा है वही खुदा है



परों को खोल ज़माना उड़ान देखता है
ज़मीं पे बैठके क्या आसमान देखता है
कनीज़ हो कोई या कोई शाहज़ादी हो
जो इश्क़ करता है कब ख़ानदान देखता है



अपनी मन्ज़िल पे पहुँचना भी, खड़े रहना भी
कितना मुश्किल है बड़े होके बड़े रहना भी
मसलेहत से भरी दुनिया में ये आसान नहीं
ज़िद भी कर लेना उसी ज़िद पे अड़े रहना भी



मैंने देखा है जो मदों की तरह रहते थे
मस्खरे बन गए दरबार में रहने के लिए

अब तो बदनामी से शोहरत का वो रिश्ता है, कि लोग
नंगे हो जाते हैं अखबार में रहने के लिए

मर के मिट्टी में मिलूँगा, खाद हो जाऊँगा मैं
फिर खिलूँगा शाख पर आबाद हो जाऊँगा मैं
तेरे सीने में उतर आऊँगा चुपके से कभी
फिर जुदा होकर तिरी फरियाद हो जाऊँगा मैं



कहीं खोया खुदा हमने कहीं दुनिया गंवाई है
बड़े शहरों में रहने की बड़ी कीमत चुकाई है
कभी तो नूर फैलेगा तिरे काग़ज़ से दुनिया में
लिखे जा जब तलक तेरे क़लम में रोशनाई है



जो चल रहा है निगाहों में मन्ज़िलें लेकर
वो धूप में भी कहाँ साएबान देखता है
मिला है हुस्न तो इस हुस्न की हिफ़ाज़त कर
संभलके चल तुझे सारा जहान देखता है



टूटते रिश्ते की पोशाक का धागा हूँ मैं

अब बुनाई से उधड़ना मिरी मजबूरी है
वरना मर जाएगा बच्चा ही मिरे अन्दर का
तितलियाँ रोज़ पकड़ना मिरी मजबूरी है

काश मैं कोई नगीना नहीं पत्थर होता
क़ैद जैसा है अँगूठी में जड़े रहना भी
तुझसे बिछड़ के तेरी वफ़ा के बग़ैर भी
मैं साँस ले रहा हूँ हवा के बग़ैर भी



मैं जी गया जो तेरे बिना तो अजब है क्या
ज़िन्दा हैं कितने लोग ख़ुदा के बग़ैर भी
कुछ लोग जुर्म करके भी आज़ाद हैं 'शकील'
हमको सज़ा मिली है ख़ता के बग़ैर भी



चन्द हीरों को ही मिलता है चमकने का नसीब
काम सब करते हैं शोहरत नहीं मिलती सबको
आइने सबने दुकानों में सजा रक्खे हैं
आइनों के लिए सूरत नहीं मिलती सबको



बार-बार आऊँगा मैं तेरी नज़र के सामने
और फिर इक रोज़ तेरी याद हो जाऊँगा मैं
अपनी जुल्फों को हवा के सामने मत खोलना
वरना खुशबू की तरह आज़ाद हो जाऊँगा मैं

तन-मन डोले, बर्तन बोले, छन-छन करता तेल है पैसा
घर से बाहर तक की दुनिया जो भी है सब खेल है पैसा
जेब में आकर आँख दिखाए, मूँछ बढ़ाए, ताव धराए
लाठी खड़के, गोली तड़के, थाना-चौकी-जेल है पैसा



धुआँ धुआँ है फ़ज़ा, रौशनी बहुत कम है
सभी से प्यार करो ज़िन्दगी बहुत कम है
जहाँ है प्यास वहाँ सब गिलास खाली हैं
जहाँ नदी है वहाँ तिश्रगी बहुत कम है
तुम आसमान पे जाना तो चाँद से कहना
जहाँ पे हम हैं वहाँ चाँदनी बहुत कम है



सवेरे निकलूँ मैं शाम आऊँ तो घर चलाऊँ
पसीना जाकर कहीं बहाऊँ तो घर चलाऊँ
जहाँ पे मरता हूँ रोज़ जीने के वास्ते मैं

वहीं से खुद को बचा के लाऊँ तो घर चलाऊँ



अंधेरी रातों के आँचलों में जो झिलमिलाता है नूर बनकर
जो चाँद तारों से आसमाँ को सजा रहा है वही खुदा है

जो बन के बादल ज़मीं पे बरसे, ज़मीं को सीचें, उगाए सब्ज़े
जो कच्ची फ़सलों को धूप बनकर पका रहा है वही खुदा है
कभी पहाड़ों की चोटियों से, कभी समुन्दर के साहिलों से
बग़ैर बोले जो अपनी जानिब बुला रहा है वही खुदा है



कहते हैं एक बार जिसे बहुआ लगी
उसको किसी दवा से बचाया न जा सका
जो रेत पर लिखे थे वो लहरों में खो गए
पत्थर पे मैं लिखा था मिटाया न जा सका



ज़िन्दगी तुमसे न मुझसे ही कटेगी तन्हा
मेरे हो जाओ मुझे अपना सहारा कर लो
टूट कर चाहो मुझे दिल से मुझे याद करो
फिर जिधर चाहो उधर मेरा नज़ारा कर लो



दराड़ और तिरे मेरे दरमियाँ आ जाय
तिरी तरह जो मिरे मुँह में भी ज़बाँ आ जाय
ये और बात कि खुद में सिमट के रहता हूँ
उठाऊँ हाथ तो बाँहों में आसमाँ आ जाय

कमाया जैसे उसी शान से उड़ाया भी
कभी भी नोट पे हमने रबर नहीं बाँधा
सलीका आया नहीं काम-काज का हमको
उठाया बोझ तो कपड़े से सर नहीं बाँधा



फूल का शाख पे आना भी बुरा लगता है
तू नहीं है तो ज़माना भी बुरा लगता है
अब बिछड़ जा कि बहुत देर से हम साथ में हैं
पेट भर जाए तो खाना भी बुरा लगता है



चल पड़ूँगा तो बहुत दूर निकल जाऊँगा
वक़्त ठहरा है अभी आ के मना ले मुझको
शोर इतना भी नहीं है कि तुझे सुन न सकूँ
दे के आवाज़ मिरे यार बुला ले मुझको

गर बिछड़ना ही मुकद्दर है तो इससे पहले
अपनी पलकों पे ज़रा देर सजा ले मुझको



गिरजों में, मस्जिदों में, शिवालों में रह गया
इन्सान बट के कितने खयालों में रह गया
दुनिया का दर्द कौन समझता, किसे था वक़्त
हर शख्स अपने-अपने कमालों में रह गया

चाँद में ढलने, सितारों में निकलने के लिए
मैं तो सूरज हूँ बुझँगा भी तो जलने के लिए
ज़िन्दगी अपने सवारों को गिराती जब है
एक मौक़ा भी नहीं देती संभलने के लिए



दर्द में खुद ही क़यामत का नशा होता है
ज़ख़्म रखते हो तो मयखानों में क्यों रहते हो
घर का हिस्सा बनो, कुछ बोझ उठाओ घर का
मेज़बानी करो मेहमानों में क्यों रहते हो



ज़लील कर मुझे लेकिन बहुत ज़लील न कर

ये ज़हर मैं भी तो जाकर कहीं निकालता हूँ

ऐ मुम्बई! मैं तुझे वारता हूँ तुझ पर ही
जो तूने मुझको दिया है यहीं निकालता हूँ



ऐसे मुझको मारो कि क्रांतिल भी ठहरूँ मैं
आखिर ये इल्ज़ाम किसी पे धरना भी तो है

अच्छी है या बुरी है चाहे जैसी है दुनिया
आया हूँ तो कुछ दिन यहाँ ठहरना भी तो है

दूर तक ठहरा हुआ झील का पानी हूँ मैं
तेरी परछाईं जो पड़ जाए तो दरिया हो जाऊँ

आदमी बनके बहुत मैंने तुझे सजदे किए
तू खुदा बन के मुझे मिल मैं फ़रिश्ता हो जाऊँ



मुझपे हैं सैकड़ों इल्ज़ाम मिरे साथ न चल
तू भी हो जाएगा बदनाम मिरे साथ न चल

इश्क़ करने को कहाँ वक़्त है मज़दूर के पास
मेरे ज़िम्मे हैं बहुत काम मिरे साथ न चल



तुझको सोचूँ तो तिरे जिस्म की खुशबू आए
मेरी ग़ज़लों में मुहब्बत की तरह तू आए

अब के मौसम में ये दीवार भी गिर जाए 'शकील'
इस तरह जिस्म की बुनियाद में आँसू आए



ठोकरें खाते रहे एक ही पत्थर से सदा
अपना रस्ता हमें हमवार न करना आया

घर बनाने को ज़मीं कम तो न थी दुनिया में
कुछ हमें ही दरो-दीवार न करना आया

खो दिया खुद को तुझे पाने की खातिर मैंने
ये सफ़र मेरा इबादत से ज़ियादा कुछ था

माँ के क़दमों तले जन्नत है सुना था मैंने
और जब समझा तो जन्नत से ज़ियादा कुछ था



कभी बचपन में मेरे साथ कनचे खेला करती थी
मैं अब तक हूँ वही बच्चा सियानी हो गई दुनिया

अभी कुछ देर पहले तक मिरी आँखों में चुभती थी
तिरी इक मुस्कुराहट से सुहानी हो गई दुनिया



पाने से भी कुछ ज़्यादा है बात न पाने में
तेरी तलब में दिल का मचलना अच्छा लगता है

मेरा भी तो कुछ रिश्ता है चाँद-सितारों से
सूरज हूँ पर शाम को ढलना अच्छा लगता है



छत दुआ देगी किसी के लिए ज़ीना बन जा
डूबता देख किसी को तो सफ़ीना बन जा

रूह तो पहले से ही पाक मिली है तुझको
दिल भी कर साफ़ ज़रा और मदीना बन जा

मुझपर ही पाँव रखकर जाते हैं सब गुज़रकर
मन्ज़िल का हूँ मैं रस्ता मैं आम आदमी हूँ

रहता हूँ थोड़ा-थोड़ा सबकी कहानियों में
मेरा न कोई क्रिस्सा मैं आम आदमी हूँ



बहुत फैला हूँ घटना चाहता हूँ
मैं बिखरा हूँ सिमटना चाहता हूँ

खड़ा हूँ पेड़ बनकर रास्ते में
मुझे काटो मैं कटना चाहता हूँ



पलट के देखा तो वो था न उसका साया था
किसी ने मुझको बहुत दूर से बुलाया था
उसी को सोच के रोई हैं बारहा आँखें
उसी को देख के इक बार मुस्कुराया था



मेरी बुनियाद को तामीर से पहचाना जाय
मुझको उजलत नहीं ताखीर से पहचाना जाय
मैं कई शक्ल में रहता हूँ बदन पर अपने
मेरा चेहरा मिरी तहरीर से पहचाना जाय

तमाम शहर सुने मुझको तेरे होंटों से
तिरे सिवा मैं किसी और पर खुलूँ भी नहीं
न जाने टूट के गिर जाये कब सरोँ पे 'शकील'
कि आसमाँ की इमारत में इक सुतूँ भी नहीं



खुद को इतना भी मत बचाया कर
बारिशें हों तो भीग जाया कर
चाँद लाकर कोई नहीं देगा
अपने चेहरे से जगमगाया कर



इक बार अपने दिल की सदा पर निकल पड़े
पाबन्दियों में फिर हमें रहना नहीं पड़ा

हम जब उदासियों से मिले मुस्कुरा दिए
गम को खुशी बना लिया, सहना नहीं पड़ा



तलाश तुमको ही करनी हैं मन्ज़िलें अपनी
हमारा काम है बस रास्ता बताने का

सभी थे भूले हुए अपने-अपने चेहरे को
सो हमने जुर्म किया आइना दिखाने का

बुझ गई आँखें मिरी, हर रंग सादा हो गया
तकते-तकते राह तेरी चाँद आधा हो गया

अब कहाँ रंगीन कपड़े, अब कहाँ बालों में फूल
हो गया बेरंग वो भी मैं भी सादा हो गया



हमसफ़र होने का दर्जा जो नहीं दे सकता
अपने रस्ते का तू सामान बना ले मुझको

जान दे दूँगा मिरी जान हिफ़ाज़त में तिरी
तू जो दिल्ली है तो सुलतान बना ले मुझको



हम खिले तो हवाओं ने बिखरा दिया
हम जले तो बुझाने की साज़िश हुई



जो परिन्दे मिरी आँखों से निकल भागे थे
उनको लफ़्ज़ों में गिरफ़्तार किया है मैंने
जानता हूँ कि मुझे क़त्ल किया जाएगा
खुद को सच कहके गुनहगार किया है मैंने



मिट गए उसके निशाँ राहों से
वो मगर आँख से ओझल न हुआ
बिक गए दाम घटा कर कुछ लोग
और मैं सोने से पीतल न हुआ



सर पे सूरज लिए खड़ा हूँ मैं
अपनी परछाई से बड़ा हूँ मैं
किसी पत्थर से टूटता भी नहीं
जाने किस प्रेम में जड़ा हूँ मैं



पता चले कि मिरा शहर कितना बेहिस है
फ़ज़ा में ज़हर किसी रोज़ घोल कर देखूँ
तू ज़िन्दगी है तो हो जाऊँ मैं फ़ना तुझमें
तू फ़िल्म है तो कोई मैं भी रोल कर देखूँ



कमा के पूरा किया जितना भी ख़सारा था
वहीं से जीत के निकला जहाँ मैं हारा था
कहानी सुनते हुए बुझ गई थीं सब आँखें
जो जल रहा था मिरे साथ इक सितारा था

ज़िन्दगी की नई उड़ान थे हम
अपनी मिट्टी में आसमान थे हम
चाँद ने रात घर पे दस्तक दी
रात भर उसके मेज़बान थे हम



ख़ुदा करे कि नई नस्ल उससे दूर रहे
वो दुश्मनी जो तिरे मिरे ख़ानदान में थी
ज़रा सा और था टीलों के रास्तों का सफ़र
फिर उसके बाद हर इक रहगुज़र ढलान में थी



ये बेवफ़ाई तो पहले से मेरे ध्यान में थी
वो दाग़ दे कि जिसे उम्र भर मैं धो न सकूँ
तिरा बयान किसी नज़्म में करूँगा कभी
ग़ज़ल की आँख में शायद तुझे समो न सकूँ



जाने किस मोड़ पे ये वह्न हकीक़त बन जाय
मेरे पीछे कोई साया सा लगा हो जैसे
फ़िक्र मेरी किसी मज़दूर के घर की चौखट
जिस्म मेरा कहीं रस्ते में पड़ा हो जैसे

नाउमीदी में उमीदों का सफ़र जारी है
फूल की चाह में काँटों का सफ़र जारी है
अब भी कुछ ख़्वाब भटकते हैं खुली सड़कों पर
अब भी टूटे हुए रिश्तों का सफ़र जारी है



हमसे मिलना है तो करीब से मिल
या तअल्लुक़ में दूरियाँ रख दे
अब जवानी हिसाब माँगती है
मेरे चेहरे पे झुर्रियाँ रख दे



जाने किस तरह मुहब्बत के पयाम आते थे
कोई कागज कोई तहरीर नहीं थी पहले



छोटे-छोटे रास्ते शहरों में जाकर खो गए
गाँव अपने साथियों की राह तकता रह गया

नाव कागज़ की न अबके छपकियाँ बच्चों की थीं
बाढ़ का पानी गली में यूँही बहता रह गया

ख्वाब देखो, कोई ख्वाहिश तो करो
जीना आसान है, कोशिश तो करो
लोग मरहम भी लगायेंगे 'शकील'
पहले ज़ख्मों की नुमाइश तो करो



अब कोई चीज़ नहीं चुभती मिरे तलवे में
पाँव ही पाँव का पापोश हुआ जाता है

कुछ तो रफ़्तार भी कछुवे की तरह है अपनी
और कुछ वक्रत भी खरगोश हुआ जाता है



गुज़र गई जब आँधियाँ तो कुछ नहीं मिला कहीं

पता भी कुछ न चल सका कहाँ-कहाँ चरागा थे

ये और बात तीरगी ने काम अपना कर दिया

ये और बात तेरे-मेरे दरमियाँ चरागा थे



खूब हँगामा भी हो जाँ भी सलामत रह जाय

ज़हर अब इश्क़ में इस तरह पिया जाता है

घर की पिक्चर में कई रोल अदा करती है माँ

खाना भी बनता है कपड़ा भी सिया जाता है

सनक गई है वो भी हमसे मिलकर कुछ

हम भी दाढ़ी मूँछ बढ़ाए रहते हैं

प्यार का खत हर बार नया ही लगता है

शब्द भले ही पढ़े-पढ़ाए रहते हैं



अब जियें किसके लिये और पियें किसके लिये

लड़खड़ाने को सहारा भी नहीं है कोई

क्या पता कौन सा रस्ता है हमारी खातिर

किस तरफ जायें इशारा भी नहीं है कोई



इबादतों में भी रिश्ता रहा गुनाहों से
कभी फ़रिश्ता कभी आदमी के साथ रहे
जो सीधी राह चले उनको ज़िन्दगी न मिली
भटक गये जो वही ज़िन्दगी के साथ रहे



आगे परियों का देस हो शायद
दूर तक राह में चमेली है
अब भी सोते में ऐसा लगता है
सर के नीचे तिरी हथेली है

अपनी ही शक्ल में रहने पे बज़िद है लोहा
देखिये क्या हो हथोड़ा भी नहीं रुकता है
रास्ता है कि पुकारे ही चला जाता है
मैं भी थकता नहीं घोड़ा भी नहीं रूकता है



छाँव में रह के मिरी प्यास न मर जाए कहीं
ज़ख्म भर जाने से अहसास न मर जाए कहीं
घोंसला देख के जागी है मकाँ की ख्वाहिश
सोचता हूँ मिरा बनबास न मर जाए कहीं



तुम क्या मिले कि हम भी ग़ज़लवार हो गए
दो चार शेर कह के ज़मींदार हो गए

खेतों में ईंट बोने का दस्तूर चल पड़ा
अब छोटे मोटे गाँव भी बाज़ार हो गए



मिलती जो आबो-हवा छोड़ के क्यों जाते हम
अपनी मिट्टी को ही ज़रखेज़ नहीं कर लेते

खुश अगर होते तो मयखाने में क्यों आते हम
आप ही आप को लबरेज़ नहीं कर लेते

देर तक करते हैं तेरी गुफ़्तगू
ऐश्ट्रे, व्हिस्की की बोतल और मैं

टूटते रहते हैं मिट्टी के लिये
फूल, खुशबू, रंग, बादल और मैं



किसी भी खेत पे बरसे, कहीं का हो जाए
खुदा करे कि ये बादल ज़मीं का हो जाए

मैं उसके जिस्म का सब ज़ह्र पी के मर जाऊँ
अगर वो साँप मिरी आस्तीं का हो जाए



कई आँखों में रहती है कई बांहें बदलती है
मुहब्बत भी सियासत की तरह राहें बदलती है

इबादत में न हो गर फायदा तो यूँ भी होता है
अक़ीदत हर नई मन्नत पे दरगाहें बदलती है

फ़िल्मी नग़मे

धोखा 2007

अंजाना दिल क्या जाने, बेगाना दिल क्या जाने
डर जाता है क्यों पाके खुशीयाँ
ये जो मैं बेकरार हूँ, हर लम्हा इश्क़ तो नहीं
ये जो मुझे बेखुदी सी है, तू जैसे मुझमे है कहीं
कभी बाहों में है दुनिया
कभी ख़ाली-ख़ाली राहें
कभी भरता है दिल ठन्डी-ठन्डी आहें
कभी आँखों में हैं सपने
कभी पलकों पे हैं आँसू
ये इश्क़ दिखाए कैसे-कैसे जादू
कभी धूप कभी बरसातें
कभी तन्हा-तन्हा रहते
मौसम हैं कितने आते-जाते इन वफ़ाओं के
अंजाना दिल क्या जाने, बेगाना दिल क्या जाने
डर जाता है क्यों पाके खुशीयाँ
ये जो मैं बेकरार हूँ, हर लम्हा इश्क़ तो नहीं
ये जो मुझे बेखुदी सी है, तू जैसे मुझमे है कहीं
मिलना है पल दो पल का, फिर लम्बी है तन्हाई
परछाई से कट जाती है परछाई
खो जाता है वो चेहरा, बस आती हैं आवाज़ें
दिल करता है खुद से ही अक्सर बातें
वही फीकी सुब्हें, वही बोझल-बोझल शामें
मौसम हैं कितने आते-जाते इन वफ़ाओं के

अंजाना दिल क्या जाने, बेगाना दिल क्या जाने
डर जाता है क्यों पाके खुशीयाँ
ये जो मैं बेकरार हूँ, हर लम्हा इश्क़ तो नहीं
ये जो मुझे बेखुदी सी है, तू जैसे मुझमे है कहीं

मदहोशी 2004

ओ जाने जानाँ
ओ जाने जानाँ
ओ जाने जानाँ
है साँस जब तक, तुम्हें मोहब्बत करेंगे जानाँ
ओ जाने जानाँ
करीब आओ तुम्हारी तन्हाइयाँ चुरा लूँ
धड़कते दिल से तुम्हारी बेताबियाँ चुरा लूँ
तुम्हारी आँखों में सात रंगों के ख्वाब रख दूँ
तुम्हारे होंटों पे चाहतों के गुलाब रख दूँ
ओ जाने जानाँ
ओ जाने जानाँ
ओ जाने जानाँ
है साँस जब तक तुम्हें मोहब्बत करेंगे जानाँ
बना लो अपना कि दूर तुमसे न रह सकेंगे
अब एक पल भी ग़मे-जुदाई न सह सकेंगे
निगाहें प्यासी हैं मुद्दतों की ख़ुमार दे दो
गले लगा के हमें वो पहला सा प्यार दे दो
ओ जाने जानाँ
ओ जाने जानाँ
ओ जाने जानाँ
है साँस जब तक, तुम्हें मोहब्बत करेंगे जानाँ
ओ जाने जानाँ

ज़हर 2005

ऐ बेखबर ऐ बेखबर
ऐ बेखबर ऐ बेखबर
मिरा दिल तिरे प्यार में आह भरे
ऐ बेखबर ऐ बेखबर
तुझे याद करे फ़रियाद करे
ऐ बेखबर ऐ बेखबर
मिरा दिल तिरे प्यार में आह भरे
तुझे याद करे फ़रियाद करे
कभी तू भी प्यार से देख ज़रा
मिरे दिल को इक नज़र
ऐ बेखबर ऐ बेखबर
तुझे पता क्या कि मेरे दिल में
है तेरी खातीर जुनून कितना
मैं अपने बारे में रूक के सोचूँ
नहीं है अब तो सुकून इतना
जीता हूँ मगर जीता भी नहीं
मरता हूँ मगर मरता भी नहीं
तिरे ग़म में फ़ना होने के लिए
पीता हूँ मैं ज़हर
ऐ बेखबर ऐ बेखबर
ऐ बेखबर ऐ बेखबर
दबा हुआ था जो मेरे सीने में
तुझको देखा तो दर्द उभरा

किसी भी मरहम से भर न पाया
तिरी जुदाई का ज़ख्म गहरा
सीने में प्यार मचलता है
आँखों से दर्द छलकता है
साहील की तरह काटे मुझको
चाहत की हर लहर
ऐ बेखबर ऐ बेखबर
ऐ बेखबर ऐ बेखबर

ई एम आई 2008

चोरी-चोरी देखे मुझको हर दीवाना
चुपके-चुपके माँगे मुझसे दिल नज़राना
चोरी-चोरी देखे मुझको हर दीवाना
चुपके-चुपके माँगे मुझसे दिल नज़राना
हाय अल्लाह, मुझमें है कशिश कैसी
कैसी है अदा
सारा आलम मुझपे फिदा
मेरी ही निगाहों का सब पे है नशा
सारा आलम मुझपे फिदा
चोरी-चोरी देखे मुझको हर दीवाना
चुपके-चुपके माँगे मुझसे दिल नज़राना
मेरे हैं मस्ताने कितने, इक शम्मा परवाने कितने
सबकी है मुझपे ही नज़र
लेकिन मैं माशूका किसकी, जाने जाँ महबूबा किसकी
ये तो है मुझको ही खबर
मेरा जादू जादू
छाया है, महफ़ील में
दिलवालों पे, मतवालों पे
चोरी-चोरी देखे मुझको हर दीवाना
चुपके-चुपके माँगे मुझसे दिल नज़राना
हाय अल्लाह, मुझमें है कशिश कैसी
कैसी है अदा
सारा आलम मुझपे फिदा

मेरी ही निगाहों का सब पे है नशा
सारा आलम मुझपे फिदा
चोरी-चोरी देखे मुझको हर दीवाना
चुपके-चुपके माँगे मुझसे दिल नज़राना
लाखों में पहचाना जाए, ऐसा इक शहज़ादा आए
भर ले जो बाहों में मुझे
ख्वाबों की सौगातें देके, मीठी-मीठी बातें करके
ले-ले पनाहों में मुझे
मुझे छूले, छूले
आँखों से, होंटों से
चाहत का हूँ मैं पैमाना
चोरी-चोरी देखे मुझको हर दीवाना
चुपके-चुपके माँगे मुझसे दिल नज़राना
चोरी-चोरी देखे मुझको हर दीवाना
चुपके-चुपके माँगे मुझसे दिल नज़राना
हाय अल्लाह, मुझमें है कशिश
कैसी, कैसी है अदा
सारा आलम मुझपे फिदा
मेरी ही निगाहों का सब पे है नशा
सारा आलम मुझपे फिदा
चोरी-चोरी देखे मुझको हर दीवाना
चुपके-चुपके माँगे मुझसे दिल नज़राना

लाइफ़ एक्सप्रेस 2010

थोड़ी सी कमी रह जाती है
थोड़ी सी कमी रह जाती है
खिलते हैं चेहरे हँसती हैं आँखें
फिर भी नमी रह जाती है
थोड़ी सी कमी रह जाती है
थोड़ी सी कमी रह जाती है
खुशियों के लम्हे आते हैं मिलने
मिलके निकल जाते हैं कहीं
आँखों में पलके जड़बो को छलके
सपने पिघल जाते हैं कहीं
शीशे पे दिल के वक़्त के ग़म की
गर्द जमी रह जाती है
थोड़ी सी कमी रह जाती है
थोड़ी सी कमी रह जाती है
रातों का ढ़लना दिन का निकलना
ले के उम्मीदें आए सवेरा
कितनी उमंगें कितनी तरंगें
करती हैं आके दिल में बसेरा
उड़ता जो मन है मिलता गगन है
लेकिन ज़मी रह जाती है
थोड़ी सी कमी रह जाती है
थोड़ी सी कमी रह जाती है

मदहोशी 2004

ऐ खुदा तूने मोहब्बत ये बनाई क्यों है
ऐ खुदा तूने मोहब्बत ये बनाई क्यों है
गर बनाई तो मोहब्बत में जुदाई क्यों है
गर बनाई तो मोहब्बत में जुदाई क्यों है
क्यों दिया प्यार मुझे इसकी ज़रूरत क्या थी
मेरी बरबादी में शामिल तिरी हिक्मत क्या थी
मेरी राहों में तो खुशबू का सफ़र रहता था
दिल में आबाद गुलाबों का नगर रहता था
ज़िंदगी ख़ार भरी राह में लाई क्यों है
ऐ खुदा तूने मोहब्बत ये बनाई क्यों है
ऐ खुदा तूने मोहब्बत ये बनाई क्यों है
मैं अगर रोऊँ तो सहारा को समन्दर कर दूँ
सख़्त हो जाऊँ अगर मोम को पत्थर कर दूँ
राख हो जाए जहाँ में जो अगर आह भरूँ
आसमाँ टूट पड़े तुझसे जो फरियाद करूँ
इतनी गहराई मिरे इश्क़ में आई क्यों है
इतनी गहराई मिरे इश्क़ में आई क्यों है
ऐ खुदा तूने मोहब्बत ये बनाई क्यों है
गर बनाई तो माहब्बत में जुदाई क्यों है

हॉन्टेड 3D 2011

जिस्म से रूह तक, हैं तुम्हारे निशाँ
बन गए तुम मिरी ज़िन्दगी
जिस्म से रूह तक, हैं तुम्हारे निशाँ
बन गए तुम मिरी ज़िन्दगी
जब से तुम हो मिले, जानो दिल हैं खिले
तुमसे वाबस्ता है हर खुशी
तुम हो मेरा प्यार तुमसे है करार
तुमको ही बसाया मैंने यादों में
तुमसे है नशा तुमसे है खुमार
तुमको ही सजाया मैंने ख्वाबों में
तुम हो मेरा प्यार तुमसे है करार
तुमको ही बसाया मैंने यादों में
जब मिले नहीं थे तुम
न थीं खुशीयाँ ना ग़म
तुम मिले तो बदले ज़िन्दगी के ये मौसम
सुन रहा है जो दुआ
मिरा रब है तुझमें
हर जगह था कुछ कम
मिला मुझे सब तुझमें
रात दीन देखना तुझको आदत मिरी
यूँ तुझे चाहना है इबादत मिरी
तुम हो मेरा प्यार तुमसे है करार
तुमको ही बसाया मैंने यादों में

तुमसे है नशा तुमसे है खुमार
तुमको ही सजाया मैंने ख्वाबों में
तुम हो मेरा प्यार तुमसे है करार
तुमको ही बसाया मैंने यादों में
आँखें सहारा मेरी तू है भीगा इक बादल
मेरी ख्वाहिशों में तू तेरे लिये मैं पागल
तू है बहती नदी डूबा डूबा मैं साहिल
मैं हूँ तुझमें फ़ना तूही मेरा है हासिल
जब से तू ओ सनम मेरी बाँहों में है
इक उजाला सा दिल की पनाहों में है
तुम हो मेरा प्यार तुमसे है करार
तुमको ही बसाया मैंने यादों में
तुमसे है नशा तुमसे है खुमार
तुमको ही सजाया मैंने ख्वाबों में
तुम हो मेरा प्यार तुमसे है करार
तुमको ही बसाया मैंने यादों में

1920 : ईविल रिटर्न्स 2012

तुम भी तन्हा थे
हम भी तन्हा थे
मिलके रोने लगे
तुम भी तन्हा थे
हम भी तन्हा थे
मिलके रोने लगे
एक जैसे थे दोनों के ग़म दवा होने लगे
तुझमे मुस्कुराते हैं
तुझमें गुनगुनाते हैं
खुद को तिरे पास ही छोड़ आते हैं
तेरे ही खयालों में
डूबे डूबे जाते हैं
खुद को तिरे पास ही छोड़ आते हैं
थोड़े भरे हैं हम थोड़े से खाली हैं
तुम भी हो उलझे से हम भी सवाली हैं
कुछ तुम भी कोरे हो कुछ हम भी सादे हैं
इक आसमाँ पर हम दो चाँद आधे हैं
कम है ज़मीं भी थोड़ी कम आसमाँ है
लगता अधूरा तुम बिन हर जहाँ है
अपनी हर कमी में हम अब तुझे ही पाते हैं
खुद को तिरे पास ही छोड़ आते हैं
जितनी भी वीरानी है तुझसे ही सजाते हैं
खुद को तिरे पास ही छोड़ आते हैं

दो राज़ मिलते हैं हमराज़ बनते हैं
सन्नाटे ऐसे ही आवाज़ बनते हैं
खमोशी में तेरी मेरी सदाएँ हैं
मेरी हथेली में तेरी दुआएँ हैं
इक साथ तेरा हो तो सौ मंज़िलें हों
तन्हाई तेरी मेरी महफ़िलें हों
हम तिरी निगाहों से ख़ुद में झिलमिलाते हैं
ख़ुद को तिरे पास ही छोड़ आते हैं
तुझसे अपनी रातों को सुब्ह बनाते हैं
ख़ुद को तिरे पास ही छोड़ आते हैं

ज़िद 2014

ऐसा लगा मुझे पहली दफा
तन्हा मैं हो गई यारा
ऐसा लगा मुझे पहली दफा
तन्हा मैं हो गई यारा
हूँ परेशान सी मैं
अब ये कहने के लिए
तू ज़रूरी सा है मुझको ज़िंदा रहने के लिये
तू ज़रूरी
सा है मुझको
ज़िंदा रहने के लिए
ऐसा लगा मुझे पहली दफा
तन्हा मैं हो गई यारा
हूँ परेशान सी मैं
अब ये कहने के लिए
तू ज़रूरी सा है मुझको ज़िंदा रहने के लिए
धड़के आँखों में दिल मिरा
जब करीब आऊँ तिरे
देखूँ मैं जब भी आइना
तू ही रुबरु रहे मेरे
इश्क़ की मौज में आ, आज्जा बहने के लिए
तू ज़रूरी सा है मुझको ज़िंदा रहने के लिए
तू ज़रूरी सा है मुझको ज़िंदा रहने के लिए
माँगूँ न कोई आसमाँ तू सितारों का जहाँ

बनजा तू मेरा हमसफ़र
न मुझे चाहिए कोई मकाँ
दिल ही काफी है तिरा मेरे रहने के लिए
तू ज़रूरी सा है मुझको ज़िंदा रहने के लिए
तू ज़रूरी सा है मुझको ज़िंदा रहने के लिए

ज़िद 2014

साँसों को जीने का इशारा मिल गया
डूबा मैं तुझमें तो किनारा मिल गया
साँसों को जीने का इशारा मिल गया
ज़िंदगी का पता दोबारा मिल गया
तू मिला तो खुदा का सहारा मिल गया
तू मिला तो खुदा का सहारा मिल गया
ग़मज़दा ग़मज़दा दिल ये था ग़मज़दा
बिन तेरे, बिन तेरे, दिल ये था ग़मज़दा
आराम दे तू मुझे
बरसों का हूँ मैं थका
पलकों पे रातें लिए
तिरे वास्ते मैं जगा
मिरे हर दर्द की गहराई को
महसूस करता है तू
तिरी आँखों से ग़म तेरा
मुझे मालूम होने लगा
तू मिला तो खुदा का सहारा मिल गया
तू मिला तो खुदा का सहारा मिल गया
ग़मज़दा ग़मज़दा दिल ये था ग़मज़दा
बिन तेरे, बिन तेरे, दिल ये था ग़मज़दा
मैं राज़ तुझसे कहूँ हमराज़ बनजा ज़रा
करनी है कुछ गुप्तगू
अलफ़ाज़ बनता ज़रा.....(2)

जुदा जब से हुआ तेरे बिना खामोश रहता हूँ मैं
लबों के पास आ
अब तू मिरी आवाज़ बन जा ज़रा
तू मिला तो खुदा का सहारा मिल गया
तू मिला तो खुदा का सहारा मिल गया
ग़मज़दा ग़मज़दा दिल ये था ग़मज़दा
बिन तेरे, बिन तेरे, दिल ये था ग़मज़दा

तुम बिन - 2 2016

अब कोई आस न उम्मीद बची हो जैसे
अब कोई आस न उम्मीद बची हो जैसे
तेरी फरियाद मगर मुझमें दबी हो जैसे
जागते-जागते इक उम्र कटी हो जैसे
अब कोई आस न उम्मीद बची हो जैसे
कैसे बिछड़ूँ कि वो मुझमें ही कहीं रहता है
उससे जब बचके गुज़रता हूँ तो ये लगता है
वो नज़र छुपके मुझे देख रही हो जैसे
अब कोई आस न उम्मीद बची हो जैसे
तेरी फरियाद मगर मुझमें दबी हो जैसे
वक़्त के पास लतीफे भी हैं मरहम भी है
क्या करूँ मैं कि मिरे दिल में तिरा ग़म भी है
मेरी हर साँस तिरे नाम लिखी हो जैसे
अब कोई आस न उम्मीद बची हो जैसे
तेरी फरियाद मगर मुझमें दबी हो जैसे
किसको नाराज़ करूँ किससे ख़फ़ा हो जाऊँ
अक्स हैं दोनों मिरे किससे जुदा हो जाऊँ
मुझसे कुछ तेरी नज़र पूछ रही हो जैसे
अब कोई आस न उम्मीद बची हो जैसे
तेरी फरियाद मगर मुझमें दबी हो जैसे
रस्ते चलते हैं मगर पाँव थमे लगते हैं
हम भी इस बर्फ़ के मन्ज़र में जमे लगते हैं
जान बाक़ी है मगर साँस रुकी हो जैसे

अब कोई आस न उम्मीद बची हो जैसे
तेरी फरियाद मगर मुझमें दबी हो जैसे
रात कुछ ऐसे कटी है कि सहर ही न मिली
जिस्म से जाँ के निकलने की खबर ही न मिली
ज़िन्दगी तेज़ बहुत तेज़ चली हो जैसे
अब कोई आस न उम्मीद बची हो जैसे
तेरी फरियाद मगर मुझमें दबी हो जैसे

नोट: इस गीत के मुखड़े और अन्तरों की तीसरी लाइन 'तुम बिन' की ग़ज़ल से ली गई है!

वो लम्हे 2006

सो जाऊँ मैं तुम अगर
मेरे ख्वाबों में आओ
मेरे ख्वाबों में आओ
खो जाऊँ मैं तुम अगर
मेरी यादों में आओ
मेरी यादों में आओ
जागी नज़र में सोई नज़र में
हर पल सनम तुम झिलमिलाओ
सो जाऊँ मैं तुम अगर
मेरे ख्वाबों में आओ
मेरे ख्वाबों में आओ
खो जाऊँ मैं तुम अगर
मेरी यादों में आओ
मेरी यादों में आओ
मेरी खुशी में शामिल रहो तुम
इस ज़िन्दगी में शामिल रहो तुम
यूँ तो हैं लाखों अरमान दिल में
महफ़िल में जाने-महफ़िल रहो तुम
होटों से मेरे शाम सवेरे
यूँही सनम तुम मुस्कुराओ
सो जाऊँ मैं तुम अगर
मेरे ख्वाबों में आओ
मेरे ख्वाबों में आओ

खो जाऊँ मैं तुम अगर
मेरी यादों में आओ
मेरी यादों में आओ
बन के सितारा आँखों में चमको
इन आती-जाती साँसों में महको
बस जाओ आके तुम मेरी जाँ में
दिल बन के मेरे सीने में धड़को
तुम मुझको चाहो
बस मुझको चाहो
सारे जहाँ को भूल जाओ
सो जाऊँ मैं तुम अगर
मेरे ख्वाबों में आओ
मेरे ख्वाबों में आओ
खो जाऊँ मैं तुम अगर
मेरी यादों में आओ
मेरी यादों में आओ
जागी नज़र में, सोई नज़र में
हर पल सनम तुम झिलमिलाओ
सो जाऊँ मैं तुम अगर
मेरे ख्वाबों में आओ
मेरे ख्वाबों में आओ
खो जाऊँ मैं तुम अगर
मेरी यादों में आओ
मेरी यादों में आओ